संजय की कलम से ..

दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य

कार्तिक की अमावस्या को भारतवर्ष के घर-घर में प्रकाश दीप जगमगा उठते हैं और बाल-वृद्ध आनन्द से भर जाते हैं। सभी अपने-अपने घरों की सफाई करते हैं। व्यापारी वर्ग इस शुभ दिवस पर पुराने खाते को बंद कर नया खाता खोलते हैं। मान्यता है कि धन की देवी श्री लक्ष्मी इस रात्रि में भ्रमण करती हैं और अलौकिक गृहों को धन-धान्य से परिपूर्ण कर देती हैं।

क्या आपने कभी विचार किया है कि श्रीलक्ष्मी के स्वागत के लिए प्रतिवर्ष दीपमाला जलाकर भी भारतवर्ष क्यों दरिद्र हो गया है? जगमगाते दीपों को देखकर भी श्री लक्ष्मी क्यों हमसे रूठ गई हैं? जलते हुए दीप उनको आकृष्ट क्यों नहीं कर पाते? वे कौन-सा दीप जलाना चाहती हैं? वस्तुत: आत्मा ही सच्चा दीपक है। विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। मनुष्य की अंतरात्मा तमसाच्छन्न है। ऐसे विकारी मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन कैसे हो सकता है? लेकिन कितनी विडंबना है कि आत्म-दीप प्रज्वलित कर कमल पुष्प सदृश अनासक्त बन कमलासीन श्री लक्ष्मी का आह्वान करने की जगह हम मिट्टी का दीप जलाकर बच्चों का खेल खेलते रहते हैं। मन-मंदिर की सफाई करने की जगह बाह्य सफाई से ही हम खुश हो जाते हैं। तभी तो श्री लक्ष्मी हमसे रूठ गई हैं। **कमल सदृश बनकर हम कमला को प्राप्त कर सकते हैं।**

अमावस्या की काली रात्रि की तरह आज चतुर्दिक घोर अज्ञान अंधकार छाया हुआ है। कहीं कुछ सूझ नहीं रहा है। मत-मतांतर के जाल में मानव मात्र भ्रमित है। सभी आत्माओं की ज्योति बुझ चुकी है। ऐसे समय में सदा जागती ज्योति निराकार परमपिता परमात्मा शिव सर्वात्माओं की ज्योति जगाने के लिए कल्प पूर्व की भांति इस धराधाम पर अवतरित हो चुके हैं और प्राय:लोप गीता ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। निर्विकारी बन उस सदा जागती ज्योति से अपनी आत्मा का दीपक जगाकर ही हम सच्ची दीपावली मना सकते हैं। तब ही इस देवभूमि भारतवर्ष पर श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना होगी जहाँ रत्नजड़ित स्वर्ण महल होंगे और घी-दूध की नदियाँ बहेंगी।

इस युगांतरकारी घटना की पावन स्मृति में ही हम दीपावली का त्योहार मनाते हैं। इस अवसर पर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक एक बड़ा दीपक जलाया जाता

(शेष..पृष्ठ 34 पर)

अमृत-सूची

- प्रश्न देश की रक्षा का *(सम्पादकीय)* 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 6
- सचित्र सेवा समाचार 8
- पुरुषोत्तम संगमयुग और 10
- 'पत्र' संपादक के नाम 13
- पता ही नहीं चला.....14
- भैया दूज का वास्तविक अर्थ. 16
- दिल से कहो, मेरा बाबा.....17
- सुनामी बनाम शिवनामी 18
- स्वर्ण-मृग प्रसंग..... 19
- प्रभु संग की मर्मस्पर्शी..... 20
- वृद्धावस्था बनाम..... 21
- हम भी दें बीती को विराम ... 22
- राजयोग से कायाकल्प..... 23
- संस्कार परिवर्तन से..... 25
- मधुमेह रोगियों के लिए..... 27
- सचित्र सेवा समाचार..... 28
- सप्ताह के दिनों का 30
- बाबा ने मुझे अपना बना.....31
- सचित्र सेवा समाचार..... 32

सदस्यता शुल्क

	वार्षिक	आजीवन
भारत		
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	800 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	800/-	8,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें - 09414006904, 09414154383

प्रश्न देश की रक्षा का

हम अक्सर इस प्रकार के समाचार सुनते रहते हैं कि ज़हरीली शराब पीकर लगभग 300 लोगों की मृत्यु हो गई या किसी कर्मचारी-अधिकारी की लापरवाही से गोदाम में आग लग जाने से 20 की मृत्यु तथा लाखों की संपत्ति नष्ट हो गई। इन्हें साधारण समाचार समझ भुला दिया जाता है परंतु यदि सीमा पर कोई दुर्घटना घटने का समाचार आता है तो सारा देश हलचल में आ जाता है। सब अपने-अपने बयान जारी करने लग जाते हैं। कोई पड़ोसी देश को मज़ा चखाने और कोई बदला लेने की योजना बनाने लगता है।

जागरूकता अंदर-बाहर दोनों दुर्घटनाओं में

एक गहरा सवाल है, ज़हरीली शराब या आग चाहे जितनी ज़िन्दगी लील दें, उन पर हम बवाल नहीं मचाते, पर सीमा पर एक की भी हत्या हो जाये तो हमारा अंग-अंग फड़क उठता है। इसका मतलब यह है कि शराब अथवा अन्य दुर्घटनाओं द्वारा होने वाली मौतों को हम मौत ही नहीं समझते। शराब हमें बेशक मार दे, भले हमारी सारी कौम के चरित्र का, स्वास्थ्य का, धन का नाश कर दे, पर हम किसी पाक वाले की गोली से मरना नहीं चाहते। शायद शराब से मरना हमें सरल लगता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि सीमाओं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता न हो, अवश्य हो, परंतु देश के अंदर की दुर्घटनाओं के प्रति भी तो कई गुणा जागरूकता हो।

एक कहानी याद आती है, एक बार एक गुरु ने अपने शिष्यों को कहा, 'काकेभ्यो दधि रक्षताम' अर्थात् कौओं से दही की रक्षा करना। आज्ञाकारी चेले लगे कौए उड़ाने, एक को भी पास फटकने नहीं दिया। गुरु जी लौटे, देखा, दही साफ, बड़े दुखी हुए। गुरु ने कहा, तुम दही की रक्षा नहीं कर सके? चेलों ने कहा, आपने कौओं से दही बचाने को कहा था, हमने एक भी कौए को आने नहीं दिया। बिल्ली आई, वह दही खा गई पर आपने यह नहीं कहा था, बिल्ली से भी दही को बचाना है। गुरु जी ने सिर पीट लिया, दुखी स्वर में कहा, अरे मूर्खो, मेरे कथन में 'दही बचाना' मुख्य था, दही की रक्षा करो, कौओं से तो करो ही, अन्य कोई क्षति पहुँचाए तो उससे भी करो। यह थोड़े ही कहा था कि केवल कौओं से करो। क्या कौए ही दही के दुश्मन हैं, और भी तो हो सकते हैं, उनसे भी रक्षा करो।

हम भी कहते हैं, भारत की रक्षा करनी है चीन से, पाकिस्तान से.. लेकिन क्या देश की आंतरिक कलह-क्लेशों, व्यसनों से रक्षा नहीं करनी है? क्या देश के धन, देश के स्वास्थ्य, देश की शान्ति और देश के भाई-चारे से खिलवाड़ करने वाले हमारे दुश्मन नहीं हैं? क्या वे कुछ भी करें, हम सोये रहेंगे? क्या उनको कुछ भी करने की छूट है?

जितना बवाल सीमा पर होने वाली मुठभेड़ों और हत्याओं पर मचता है, उतना ही ज़हरीली शराब, बलात्कार, अपहरण, हिंसा, पक्षपात आदि पर भी मचे तो इन सबको अंजाम देने वालों पर कुछ थू-थू तो हो।

कारण है मानवीय दुर्बलता

प्रतिदिन घटने वाली दुर्घटनाओं, लापरवाहियों, अत्याचारों, अनाचारों, दुराचारों में कितने जीवन अकाल काल के ग्रास बन जाते हैं। इन सबके पीछे हैं मानवीय दुर्बलतायें। मानवीय आचरण और चरित्र में छेद पाकर ही तो बुराइयाँ समाज और देश रूपी शरीर में प्रवेश करती हैं।

चाहिए आंतरिक बल

हमें देखना है कि हममें लालच, चोरी, रिश्वत, पक्षपात, कामचोरी, अस्वच्छता जैसी चारित्रिक कमजोरियाँ क्यों हैं? उत्तर बड़ा स्पष्ट

है। आंतरिक बल की कमी है। आज हमें चाहिए वैचारिक बल, नैतिक बल और आध्यात्मिक बल इन दुर्बलताओं को जीतने के लिए।

आवश्यकता है आध्यात्मिक जागरण की

अध्यात्म कहता है, शरीर चाहे जितना भी भारी-भरकम हो, उसे गति देने वाला तो एक सूक्ष्म संकल्प ही है। संकल्प, चेतन आत्मा में भरे हुए संस्कारों और स्मृतियों के आधार पर ही उठता है। यही कारण है कि बाहर का दृश्य एक समान होते भी उसके प्रति उठने वाली प्रतिक्रियाएँ हरेक मानव की अपनी-अपनी होती हैं। जैसे रास्ते में खड़ी गाय पर नज़र पड़ी तो एक ने उसे माता समझ, उसको घर से कुछ लाकर खिलाने का संकल्प किया। दूसरे ने उसको दूध उपलब्ध कराने वाले साधन की दृष्टि से देखा और तीसरा उसके शरीर के माँस के नाप-तोल के आधार पर उसकी कीमत आंकने लगा। गाय एक है परंतु देखने वाले तीनों में से एक पूज्यभाव रखता है, दूसरा जीवन उपयोगी साधन मानता है और तीसरा अल्प स्वार्थ सिद्धि के लिए उसके अस्तित्व को ही मिटा देना चाहता है। इस देश रूपी गाय के प्रति भी देश के लोगों के अलग-अलग विचार हैं। जिनके विचार स्वार्थ भरे हैं, लूट-खसूट और बरबादी के हैं, उनके विचारों को न तो जोर-जबर्दस्ती से बदला जा सकता है, न दबाया जा सकता है। इसके लिए चाहिए आध्यात्मिक समझ। आज देशव्यापी आध्यात्मिक जागरण की आवश्यकता है। हम बहुत सारे मौकों पर जागरण करते हैं परंतु आज आवश्यकता है स्वयं की सुषुप्त शक्तियों को जगा सकने वाले जागरण की।

सुविचार ही सच्ची संपत्ति है

आध्यात्मिक समझ अर्थात् व्यक्ति यह समझे कि उसकी सच्ची संपत्ति उसका सुविचार है, विचार का शुद्धिकरण ही जीवन की अमूल्य उपलब्धि है। अपने विचारों को मैला, कुरूप, गंदा, विकारी, स्वार्थी बनाकर हम कुछ भी हस्तगत कर लें, वह तो यहीं रह जायेगा पर यह मैला, कुरूप, गंदा, विकारी, स्वार्थी विचार जन्म-जन्म हमारा पीछा करेगा, हमें कहीं भी शान्ति से बैठने नहीं देगा, न लोक में, न परलोक में। अध्यात्म प्रदत्त इस अनुभूति से व्यक्ति हर कर्म करते हुए, व्यवहार निभाते हुए विचारों के शुद्धिकरण को सर्वोपरि महत्त्व देने लगता है और यहीं से प्रारंभ हो जाती है स्वार्थी से परमार्थी बनने की प्रक्रिया।

निष्क्रिय नहीं, चिंतनशील और प्रकाशमान

कई लोग समझते हैं, आध्यात्मिकता व्यक्ति को निष्क्रिय बना देती है। ऐसा सवाल किसी जिज्ञासु ने महर्षि रमण से पूछा था। कहने लगा, अनेक लोग देश की सेवा में अनेकानेक कार्यों में लगे हैं, तब आप क्यों निष्क्रिय बैठे हैं? महर्षि ने सहज उत्तर दिया, चक्की का निचला पाट स्थिर रहता है और ऊपर वाला पाट घूमता रहता है, तभी आटा पिसता है। दोनों घूमें तो बात बनेगी नहीं। किसी को चिंतन करने और प्रकाश देने के लिए स्थिर भी तो बैठना चाहिए।

आज देश के चारित्रिक उत्थान के लिए चक्की के निचले पाट जैसी मानसिक स्थिरता चाहिए। कोई भी हमारा दुश्मन नहीं है। यदि हम मूल्यों से सशक्त और चारित्रिक रूप से दृढ़ हैं तो वसुधैव कुटुम्बकम की भावना हमारी दीवारों से पार भी फैल जायेगी। **हम विकारों के वशीभूत होकर, अपने ही देश और देशी भाइयों से धोखाधड़ी करना छोड़ दें, फिर किसी की क्या हिम्मत जो हमें धोखा दे।** इतिहास गवाह है, चाहे मुस्लिम साम्राज्य ने चाहे अंग्रेज़ी साम्राज्य ने भारत में विस्तार पाया तो प्रवेश का छिद्र किसी न किसी स्वदेशी की चारित्रिक कमजोरी से ही मिला था। आज आवश्यकता है कि हम अपने छिद्रों को बंद करें और घर को शान्ति और स्थिरता से भरपूर रखें तो हमारे ये शुभ प्रकंपन हमारी दीवारों को भी सुरक्षित कर देंगे।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

प्रश्नः- बाबा की शिक्षाओं को अमल में लाने का औरों पर क्या प्रभाव होगा?

उत्तरः- सेवा के लिए बाबा की जो श्रीमत मिली हैं, उन को हमने प्रैक्टिकल अमल में लाया है? पहले पढ़ाई पढ़ते हैं फिर प्रैक्टिस करते है। प्रैक्टिस इतनी अच्छी हो जाये, तो सफलता पीछे घूमती रहे क्योंकि एक बार ज्ञान बुद्धि में अच्छी तरह से आ गया तो दिन-रात सेवा में लग जाना चाहिए। तो अगर हम आत्मायें बाबा की शिक्षाओं को अमल में लाती हैं तो अनेक आत्माओं को सफलता दिलाने के निमित्त बन सकते हैं। श्रीमत पर सेवा करते रहो तो सफलता छिम-छिम करके आयेगी। सच्ची दिल से सच्चा पुरुषार्थ करो। खुद, खुद से ईमानदार रहो, ईमानदार शब्द की गहराई में जाके अपने को देखो कि हमारा ऐसा पुरुषार्थ है, जो बाबा के दिल से निकले, ये मेरे सच्चे बच्चे हैं। जब तक बाबा हमें सच्चाई का सर्टीफिकेट नहीं देगा तब तक हमारे पुरुषार्थ में कमी रहेगी। सच्ची लगन से लगाव मुक्त, नेचुरल बाबा की याद में समाये हुए रहो, जिससे पुराने विकर्म विनाश हो जायें। सदैव अन्दर से यह हो कि हम फ्री हैं या कोई फिकर है? केयरलेस हैं या केयरफ्री हैं? दिन-रात अपने को चेक करके चेंज करने के लिये हमारे पास टाइम बहुत है। टाइम है चेंज होने का, जब तक नई सतयुगी दुनिया में आने वाले तैयार नहीं हुए हैं, लायक नहीं बने हैं तब तक बाबा विनाश को रोक रहा है। विनाश थोड़ा जलवा दिखाता है, बाबा फिर शान्त कर देता है ताकि बच्चे तैयार हो जायें। बाबा कितनी मेहनत करता है साकार में भी, अभी अव्यक्त में भी। तो अपने को देखो, बाबा ने जो कहा, हमने वो किया? पढ़ना, फिर रिपीट करना इज़ी है परन्तु साथ-साथ यह चेक भी करना है, बाबा ने जो कहा वो हमारे से एक महावाक्य भी मिस न हो क्योंकि बाबा का एक महावाक्य भी अगर हम यूज़ करते हैं तो वो वरदान का रूप आपेही हो जाता है।

प्रश्नः- शिव बाबा ईमानदार बच्चा किसे कहते हैं?

उत्तरः- नम्बरवन में आना हो तो अपने से पूछो कि मैं आज्ञाकारी, वफ़ादार हूँ? एक बाबा के सिवाए दूसरा कुछ याद नहीं आता है? दूसरे भी हमें याद नहीं कर सकते हैं। जैसे पाँच स्वरूपों की ड्रिल बाबा ने बताई, ऐसे यह भी ड्रिल करो कि मैं ईमानदार हूँ? यज्ञ की एक पेनी भी व्यर्थ न जाये। मैं फ़रमानबरदार होके चलता/चलती हूँ? फालतू बात थोड़ी भी करना, यह बेइमानी है। वो बाबा का बच्चा नहीं है। आपस में फालतू बात करने वाले बाबा के दिल पर चढ़ नहीं सकते। उनको बाबा की याद आ नहीं सकती। तो जो ऐसे ईमानदार होकर चलते हैं, उन्हें बाबा दिल से प्यार करता है। जिसे बाबा दिल से प्यार करे उसमें और ही शक्ति आ

जाती है। यज्ञ के भोजन का महत्व जिस आत्मा को है उसकी अवस्था कभी नीचे-ऊपर नहीं होगी।

प्रश्नः- राजयोग क्या है?

उत्तरः- बाबा मेरे से क्या चाहता है? यह है राजयोग। बाबा ने दृष्टि दे करके हमारी आँखों को ही बदल दिया, देखना है तो क्या? सुनना है तो क्या? यह है राजयोग, जिससे बल मिलता है। मुझे क्या देखना है, क्या सुनना है, क्या बोलना है? इतना अपने ऊपर ध्यान रखेंगे यानि जितना साफ रहेंगे तो सेफ रहेंगे। ज़रा-सा छींटा भी हमारे ऊपर पड़ा तो इज्जत हमारी ही गई, गफलत हमारी ही मानी जायेगी, इसमें कोई भी कारण नहीं दे सकते हैं। अच्छी बात ले लो फायदे के लिये, किसको दोष मत दो। कोई भी कारण सोचना, बताना, दिल में रखना यह सब समय की बर्बादी है। तो या है वरदान या है वरी। न वरी, न हरी, न करी।

प्रश्नः- चारों विषयों (ज्ञान, योग, धारणा, सेवा) के आपसी संतुलन का क्या अर्थ है?

उत्तरः- 1.योग लगाकर ज्ञान सुनाते हैं तो दूसरे का भी बाबा से योग लग जायेगा। योग नहीं है तो ज्ञान कितना भी अच्छा हो, बाबा से कनेक्शन नहीं जुटेगा। एक कान से सुन दूसरे से ज्ञान निकल जायेगा और योग का अनुभव नहीं करा पायेंगे।

2- कोई भी बात अपनी या पराई चित्त पर न रहे। अच्छी बात है वो याद रहती है, फालतू की सब बातें भूल जायें। मन बिल्कुल फ्री है। कोई बात बुद्धि को खींच न पाये।

3- अगर सेवा में बिजी रहें तो माया को आने का चांस नहीं है लेकिन सिर्फ बिज़ी रहने के लिये सेवा नहीं करनी है। सेवा मेरा भाग्य है। त्याग का भाग्य है। मम्मा-बाबा की त्याग वृत्ति देख हम सभी को त्याग करना सहज हो गया। देह के सम्बन्ध की कुछ भी याद नहीं। वन्डर है, कैसे त्याग हो गया।

4- सारी सेवा त्याग और तपस्या के आधार से है। मान-शान मिले, पोज़ीशन मिले उस आधार से सेवा नहीं है। सेवा में समय सफल हो रहा है, मेरा यह भाग्य है। सेवा स्थिति को अडोल बनाने का साधन है, छोटी-मोटी बातें स्वतः ही पार हो जायेंगी।

प्रश्नः- अच्छी स्थिति बनाने के लिए क्या करें?

उत्तरः- स्थिति में सच्चाई, सफाई, सादगी हो। जितना सिम्पल रहें उतना सुखी हैं, इसलिये यह चाहिए, वह चाहिए... कोई ज़रूरत नहीं है। चाहिए-चाहिए-चाहिए बड़ा नुकसानकारक है। एक है मेरे लिये होना चाहिए..., और नहीं तो यह तो होना चाहिए...। दूसरा, यहाँ सिस्टम ऐसी होनी चाहिए...। तीसरा, इसको यह समझाना चाहिए... अरे, तुमको क्या करने का है! अपने को कुछ नहीं चाहिए, जो बाबा की मेरे में उम्मीदें हैं ना वो पूरी करनी हैं बस। बाकी किसी भी प्रकार का 'चाहिए' शब्द नुकसानकारक है, इससे फ्री हो जाओ तो बहुत राजाई है।

संगमयुग पर बाबा के राजे बच्चे बन जाओ, बाबा की यह बात सिरमाथे पर रख दो। कैसी भी आत्मा हो उसके लिये भी रहमदिल बनो। मन में, दिल में सच्चाई और प्रेम का भण्डारा भरपूर हो, दाता बन देते जाओ। भाग्यविधाता ब्रह्मा बाबा, वरदाता शिवबाबा, भाग्य है जो यहाँ बैठने, खाने, पहनने के लिये बिगर मांगे बाबा की तरफ से सबकुछ मिलता है। दिल साफ रखो, तो बाबा से जो चाहिए वो आपे ही मिल सकता है। किसी की, कोई भी बात दिल में रखी तो बाबा दृष्टि नहीं देगा। कोई भी बात सामने आये, बाबा के सामने बैठ जाओ तो बात चली गई, ऐसी अवस्था बन जाये। ऐसे किया है हमने तब बता रहे हैं। अभी बाबा ने कहा, शिव शक्ति बन जाओ तो बस और क्या चाहिए! ❖

पुरुषोत्तम संगमयुग और स्वर्णयुग में स्वर्ण की महिमा की दास्तान

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

प्यारे शिव बाबा ने हम बच्चों को अनेक बातों के लिए ज्ञान की नई रोशनी दी है जिसके कारण कई बातों में हमारा दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ है जैसे पहले हम धन को माया समझते थे और सोचते थे कि घर-बार का त्याग करने से ही जीवन सफल हो सकता है परंतु अब धन को माया नहीं समझते। अब जैसे हम तन, मन को ईश्वरीय सेवा में सफल करते हैं, वैसे ही धन को भी सफल करते हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल पुष्प समान पवित्र जीवन व्यतीत करना तथा मुक्ति-जीवन्मुक्ति का वर्सा प्राप्त करना हमारा लक्ष्य हो गया है। आज की दुनिया में भले धन को माया समझते हैं फिर भी सोना-चांदी के बारे में लोगों का उमंग-उत्साह तथा उसे गहनों के रूप में पहनने का भौतिक आनंद कम नहीं हुआ है। सोना-चाँदी भौतिक होते हुए भी शिवबाबा के ज्ञान के हिसाब से इनका आध्यात्मिक अर्थ भी है। सृष्टि-चक्र के हिसाब से चार मुख्य युग हैं – सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। इनको अंग्रेजी में Golden Age, Silver Age, Copper Age, Iron Age कहा जाता है जिनका अर्थ स्वर्णयुग, रजतयुग, ताम्रयुग तथा लौहयुग होता है। सतयुग का वास्तव में अंग्रेजी भाषांतर Age of Truth होना चाहिए पर उसके बदले हम Golden Age कहते हैं जिसका हिन्दी भाषांतर स्वर्णयुग होता है।

सोने के बारे में शुरू से ही बहुत आकर्षण रहा है। राजा-महाराजाओं के ज़माने में सोने के महल, मुकुट, गहने आदि बनते थे। भारत को भी सोने की चिड़िया कहा जाता था। पिछले एक साल से सोने और चांदी के दाम दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही रहते हैं। इसलिए हमें थोड़ा सोने के बारे में चिंतन करने की ज़रूरत है।

जब से सोना ज़मीन से निकलने लगा है तब से 2008 के अंत तक पृथ्वी से 1,62,000 टन सोना निकाला गया है और अभी भी जमीन के अंदर रिजर्व स्टॉक 90,000 टन का है। सोने का वज़न औंस या टन में होता है। 1 औंस = 31.1035 ग्राम सोना होता है। सोने को खानों से निकाला जाता है, बाद में उसे शुद्ध किया जाता है। एक औंस सोने का बाजार मूल्य अमेरिका के हिसाब से 1720 डालर होता है। भारत के हिसाब से 31.03.2011 के दिन 10 ग्राम सोने का बाजार मूल्य 20,775 रुपये था और अब तो आप सब जानते हैं कि 26,000 रुपये से भी ज्यादा हो गया है।

प्यारे ब्रह्मा बाबा ने हमें बताया था कि जब वे लौकिक दुनिया में हीरे-जवाहरात का कारोबार करते थे तो एक स्वर्ण मुद्रा का दाम सिर्फ 9 रुपये था, उस समय सोना सस्ता था, आज वह कितना महंगा हो गया है क्योंकि लोग समझते हैं कि सोने में निवेश करने से ही आइवेल (मुश्किल समय) के लिए सुरक्षा होगी। एक कहानी है कि एक राजा ने भगवान से वरदान माँगा कि मैं जिसको भी हाथ लगाऊँ, वह सोना बन जाए और भगवान ने तथास्तु कहा। राजा बहुत खुश हुआ परंतु जैसे ही उसने खाने के लिए भोजन को हाथ लगाया, वह सोना बन गया। उसने पानी पीने के लिए गिलास को छुआ तो वह पानी भी सोना बन गया। इतने में उसकी रानी और बच्ची उसके पास आईं। जैसे ही राजा ने उन्हें छुआ तो वे भी सोने के बन गये तो राजा हैरान-परेशान हो गया। उसने भगवान को कहा कि अपना वरदान वापस ले लीजिए, यह वरदान नहीं लेकिन श्राप है। इस प्रकार सोने के बारे में बहुत-सी कहानियाँ प्रचलित हैं। आज दुनिया के अनेक देशों में सोने का उत्पादन होता है। सन् 2010

में किन देशों में कितना सोना निकला, उसका चार्ट अखबारों में आया है, जो इस प्रकार है –

1. अमेरिका	234 टन
2. कनाडा	100 टन
3. पेरू	175 टन
4. ग्याना	81 टन
5. दक्षिणी अफ्रीका	232 टन
6. रशिया	164 टन
7. उज्बीकिस्तान	85 टन
8. चीन	288 टन
9. इंडोनेशिया	90 टन
10. आस्ट्रेलिया	225 टन

इस प्रकार सन् 2010 में कुल 1674 टन सोना निकाला गया। सन् 2005 में 2518 टन, सन् 2006 में 2468 टन, सन् 2007 में 2444 टन सोना खदानों से निकाला गया। सोने का विभिन्न चीज़ों में जो उपयोग होता है, वे आँकड़े इस प्रकार हैं –

1. गहने	51%
2. निवेश	17%
3. सरकार के पास रिजर्व	18%
4. उद्योग	12%
5. फुटकर	2%

भारत में सबसे ज्यादा गहनों में सोने का उपयोग होता है। भारत सरकार ने सोने के उपयोग पर नियंत्रण लगाने हेतु यह नियम बनाया कि 14 कैरेट से ज्यादा सोने का उपयोग गहनों में नहीं करना है तो काला बाजारी शुरू हो गई और आखिर में सरकार को अपने कानून में परिवर्तन करना पड़ा और लोगों को जितना चाहिए, उतना गहना बनाने की छुट्टी दी। वर्तमान समय दुनिया में जितना सोना निकलता, उसका 24% अर्थात् 580-600 टन सोना प्रतिवर्ष जेवर बनाने में भारत में प्रयोग होता है।

सन् 1930 तक सारी दुनिया की जितनी भी मुद्राएँ थीं, उनके पीछे Gold Standard था अर्थात् जितने कागज के नोट सरकार छापती, उतना ही स्टॉक में सोना सरकार रखती थी अथवा जितना सोना स्टॉक में होता उतने ही कागज के नोट छापती थी परंतु सन् 1930 में मंदी के समय इतनी भयंकर परिस्थिति उत्पन्न हुई जिससे दुनिया के अर्थशास्त्रियों ने हरेक देश की सरकार को कहा कि आप उत्पादन बढ़ाने के लिए खर्च की अनेक योजनायें बनायें जिससे लोगों को नौकरी-धंधा मिले। इस प्रकार सभी देशों ने सोने का स्टॉक रखने का जो नियम था, वह खत्म किया और नोट छापने लगे। परिणामरूप जैसे-जैसे नोट छपते रहे, वैसे-वैसे महंगाई बढ़ती गई क्योंकि लोगों के पास पैसे बढ़ते गये पर चीज़ की पूर्ति वही की वही थी। उसमें भी पहले विश्वयुद्ध के कारण जो नुकसान हुआ तो सभी देशों ने युद्ध का खर्चा जर्मनी से लेने का निश्चय किया तो हिटलर जैसे तानाशाहों ने नोट छापना शुरू कर दिया और इतने नोट छप गये कि बाज़ार में कुछ भी चीज़ लेने जाते थे तो टोकरा भरकर नोट लेकर जाना पड़ता था और उससे मुश्किल से आधी थैली खाने-पीने का सामान आता था। वर्तमान समय ज़िम्बाब्वे देश में यही परिस्थिति है। वहाँ करोड़ों डॉलर की मुद्राओं के नोट छपते हैं। मैं भी अपना एक हँसी का अनुभव सुनाऊँ। सन् 1977 में जब हम मैक्सिको में ईश्वरीय सेवार्थ गये थे तब वहाँ पर मुझे किसी भाई ने सेवार्थ डेढ़ लाख का एक नोट दिया। मैं बहुत खुश हो गया कि विश्व की सेवार्थ यह पैसा काम आयेगा। लेकिन बाद में पता लगा कि वहाँ की मुद्रा के हिसाब से डेढ़ लाख का अर्थ 15 डॉलर अर्थात् 600 रुपये ही होता है, इतनी वहाँ पर पैसे की कीमत कम हो गई है। ऐसे ही सन् 1974 में जब हम ज़ाम्बिया गये तो देखा कि उस देश की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत थी कि वहाँ की एक रुपये की स्थानीय मुद्रा अमेरिका के एक डॉलर के बराबर थी। आज उस देश की आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ गई है कि अमेरिका का एक डॉलर वहाँ के तीन-चार हजार रुपये के बराबर है।

व्यक्तियों के पास स्टॉक में कितना सोना होगा, वह अंदाज तो निकाला नहीं जा सकता। भारत में कई ऐसे परिवार हैं जहाँ दहेज देना पड़ता है और दहेज में सोने के गहने दिये जाते हैं जो किलोग्राम में दिये जाते हैं। अभी भी कई देशों ने अपने पास स्टॉक में सोना रखा है।

वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के द्वारा 31 मार्च 2011 के दिन विभिन्न देशों की सरकारों के पास कितना सोने का स्टॉक है, वह अंदाज प्रकाशित हुआ है।

अमेरिका	8670.5 टन
जर्मनी	3412.1 टन
इटली	2212.8 टन
स्विटजरलैण्ड	1040.1 टन
भारत	790.8 टन
जापान	765.2 टन

इस प्रकार से सोना अभी भी दुनिया के कई देशों के पास है। शिवबाबा ने हम बच्चों को बताया है कि सतयुग में सोने के महल होंगे और वहाँ पर सोने का कोई मूल्य नहीं होगा। सोने की खानियाँ सब भरपूर हो जायेंगी।

वर्तमान समय सोने-चांदी के दाम दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं जिसका चार्ट इस प्रकार है –

	सोना (10 ग्राम)	चांदी (1 किलोग्राम)
31 मार्च 1997	4225 रु.	7345 रु.
31 मार्च 2007	9400 रु.	19500 रु.
31 मार्च 2010	16320 रु.	27255 रु.
31 मार्च 2011	20775 रु.	56900 रु.

अभी 14 अगस्त 2011 के दिन 10 ग्राम सोने का मूल्य 26,000 रुपये था तथा चांदी का 58300 रुपये प्रति किलोग्राम था। दुनिया में जो महंगाई बढ़ रही है, उसके अनेक कारण हैं। एक कारण यह है कि पहले अगर सरकार कागज के नोट छापती थी तो उसका यह फर्ज था कि अगर कोई व्यक्ति बैंक में जाकर नोट के बदले सोना माँगता तो सरकार उसे देने के लिए जिम्मेवार थी परंतु सन् 1930 के बाद से Gold Standard निकाल दिया गया अभी जो नोट निकलता है, उस पर सरकार Promise लिखती है कि मैं सौ रुपये ही दूंगी। उसके बदले सोना देने की गारंटी नहीं देते। इस कारण सभी देशों की सरकारें नोट छापती ही रहती हैं और साथ ही कर्ज़ा भी लेती रहती हैं। दुनिया के कई देश ऐसे हैं जहाँ सरकारों पर बहुत कर्जा है। कर्ज़ा लेने में नंबर वन देश अमेरिका है। अमेरिका देश का राष्ट्रीय ऋण इतना है जो दुनिया के 150 बड़े देशों के कुल राष्ट्रीय ऋण से भी अधिक है। वर्तमान समय तो अमेरिका की साख में भी गिरावट आई है। इसका प्रभाव दुनिया के सभी देशों पर पड़ेगा। भारत सरकार के पास भी अमेरिका के 42 अरब डॉलर के Bonds हैं और भारत के अर्थशास्त्री सरकार को कहते हैं कि आप अमेरिका के ये 42 अरब डॉलर के जो Bonds हैं, उन्हें बेच दो और उसके बदले सोना ले लो तो कम से कम 800 टन सोना भारत के पास आ जायेगा। इससे सोने के दाम जो बढ़ते रहते हैं, उसका फायदा भी हो सकता है और डॉलर के मूल्य में जो कमी या वृद्धि होती रहती है, उस नुकसान से भी भारत बच जायेगा परंतु प्रश्न है कि अमेरिका की सरकार यह करने देगी?

इस प्रकार से आज की दुनिया में सोने के बारे में बहुत-सी चर्चायें चल रही हैं, उसके बीच में जब हम गोल्डन एज की बात करते हैं तो दुनिया वाले हँसते हैं कि गोल्डन एज कैसे आयेगा जबकि महंगाई भी इतनी बढ़ रही है। इस लेख में मैंने सोने के बारे में इसलिए लिखा है कि आज की दुनिया में आध्यात्मिकता और भौतिकता में जो भेद है, वह भविष्य में नहीं रहेगा। भविष्य सतयुग में आध्यात्मिकता और भौतिकता के बीच सुंदर संतुलन बनेगा जिसमें नारायण आध्यात्मिकता का मुख्य स्त्रोत हैं तो लक्ष्मी भौतिक धन की स्त्रोत हैं। इस प्रकार सतयुगी दुनिया में आध्यात्मिकता और भौतिकता दोनों का सुंदर सौ प्रतिशत कारोबार चलेगा। इसी कारण हमें सोने के बारे में और भविष्य में सोने का उपयोग किस प्रकार होगा, इन सब बातों पर सोचना चाहिए। (क्रमशः)

'पत्र' संपादक के नाम

मई अंक का संपादकीय लेख 'मनमनाभव' बहुत प्यारा और अच्छा लगा। वास्तव में मन ही भगवान तक पहुँच सकता है, हृदय शरीर से अलग होकर परमधाम तक पहुँच ही नहीं सकता तभी तो भगवान ने कहा है, मन मेरे में लगाओ। मनमनाभव कहा गया है, दिलदिलाभव नहीं। 'सहनशीलता-अमूल्य गुण' लेख बहुत रुचिकर लगा जिसमें सहनशीलता के आठ सूत्र याद रखने के लिए कहा गया। वास्तव में, सहन करना प्रभु-प्रेम की निशानी है। 'पारसमणि' लेख से हमें सीख मिलती है कि सहज धन के आकर्षण से दूर रहने में ही भलाई है। भगवान कहते हैं, साधना का बल बढ़ाओ, साधन स्वत: आयेंगे और साधना को आंच भी नहीं आ सकेगी। 'अथाह ज्ञान-भंडार थे भ्राता जगदीश जी' लेख में ज्ञानामृत के प्रथम संपादक भ्राता जगदीश जी के बारे में पढ़ा जिनकी महिमा स्वयं शिवबाबा भी मुरली में करते हैं।

– ब्रह्माकुमार प्रवेश,
गोवर्धन (मथुरा)

ज्ञानामृत सचमुच ही ज्ञान रूपी अमृत कलश है। असंतुष्ट व प्यासा मानव इसको पढ़कर तृप्ति का अनुभव करता है। मई अंक में 'ईश्वर मर्ज़ी और मनमर्ज़ी' लेख में लेखिका ने उदाहरणों के माध्यम से ईश्वर की सोच और मानव की सोच की भिन्नता का इतना अच्छा स्पष्टीकरण किया है जो पाठकों के मन को छू लेता है। 'व्यर्थ से बचिए' लेख सराहनीय है। 'पुरुषोत्तम संगमयुग एवं भविष्य का राज्य कारोबार' लेख में निर्विघ्न स्थिति बनाने के लिए बताई गई युक्तियाँ बहुत उपयुक्त लगी। इसके लिए भ्राता जी को व ज्ञानामृत के पूरे स्टाफ को कोटि-कोटि धन्यवाद!

– ब्रह्माकुमारी बसन्ती,
नागौर

'ज्ञानामृत' पत्रिका का जून अंक एक ब्रह्माकुमार मित्र के माध्यम से प्राप्त हुआ। इसे पढ़ने के बाद मुझे अहसास हुआ कि भारत देश की पवित्र भूमि इतना अनाचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, कुव्यवस्था को झेलने के बाद भी बची हुई है तो उसके पीछे ज्ञानामृत और इससे मिलती-जुलती आध्यात्मिक, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक, शिक्षाप्रद पत्रिकाओं का और इन्हें संचालित व प्रकाशित करने वाली संस्थाओं का काफी योगदान है। आप लोगों ने मिलकर समाज में जागृति लाने और ज्वलंत समस्याओं को दूर करने हेतु आवश्यक उपाय बताने का जो कार्यभार संभाला है, वो अपने आप में काफी सराहनीय है और मैं भी आपकी संस्था से जुड़कर इस सामाजिक और अलौकिक कार्य को करने में अपनी पूरी भागीदारी देने की चेष्टा करूँगा।

– डॉ.विनोद कुमार , गया

जून, 2011 अंक में 'परम भाग्यशाली कुमारी जीवन' लेख में लेखिका बहन ने ढेर सारी मेरे मन की बातें कह डालीं। मैं सोचता रह गया और वो लिख गईं। उन्होंने तुलनात्मक वाक्य अति सुंदर लिखा है कि कुमारी को परमात्म वर वरण करना कुमार या अधरकुमारों की भेंट में सरल है। उच्च आध्यात्मिक संबंध रस की अति रमणीक व्याख्या हेतु लेखिका बहन का हार्दिक अभिनंदन और धन्यवाद!

– शैलेन्द्र, इंदौर

मई, 2011 के अंक में 'सहनशीलता-अमूल्य गुण' यह सुंदर और दर्जेदार लेख पढ़ा। इसमें बताये गये सहनशीलता के आठ सूत्र जीवन में स्वीकार कर लें तो जीवन हीरे तुल्य जरूर बन जायेगा। वह बाबा का लाड़ला और प्यारा भी बन जायेगा। अन्य कई लेख भी बहुत अच्छे लगे। पढ़कर मन को प्रसन्नता मिली। ज्ञानामृत से मन को उमंग-उत्साह और प्रेरणा मिलती है। सुख-शान्ति देने की भावना बढ़ती है।

– लालाजी गोवेकर, मेहकर

पता ही नहीं चला, विकार कब छूट गए

● ब्रह्माकुमार अशोक कुमार, जबलपुर (कटंगा)

वह 3 अक्टूबर, 2007 का दिन था। मुझे लायन्स क्लब के अध्यक्ष श्री राजीव जैन ने बताया कि क्लब के सदस्यों की बैठक कल प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थानीय शाखा में रखी गई है जिसमें इस विश्व विद्यालय के मुख्यालय माउंट आबू से आई हुई एक बहन भाषण देंगी। यह शाखा मेरे घर के बहुत नज़दीक है किंतु कभी ध्यान नहीं दिया था।

भाषण ने अंदर तक झकझोर दिया

कार्यक्रमानुसार अगली सायं 4 बजे क्लब के 60 सदस्यों में से 22 सदस्य ही शाखा में पहुँचे, मैं भी युगल के साथ उपस्थित था। सेन्टर की एक बहन जी ने हमारा परिचय माउंट आबू से आई हुई सफेद वस्त्रधारी बहन जी से कराया, जो बिल्कुल साधारण-सी दिख रही थी किंतु जब उन्होंने भाषण शुरू किया तो एक विशेष तेज उनके चेहरे से झलकने लगा। इस आकर्षण में मैं दुनिया को भूलकर बड़ी लगन से उन्हें सुनने लगा। उन्होंने इस कलियुगी दुनिया पर वेगपूर्ण भाषण दिया जिसने मुझे अंदर तक झकझोर कर रख दिया। अन्त में उन्होंने सतोगुणी बनने का आह्वान किया और बड़े स्नेह से सभी भाई-बहनों से सात दिन चलने वाले ईश्वरीय ज्ञान कोर्स में आने का निवेदन भी किया।

अकेला ही पहुँचा

दूसरे दिन नियत समय पर 22 लोगों में से मैं अकेला ही सेन्टर पहुँचा। मैंने आबू से पधारी बहन जी की सातों दिन की क्लास अटेंड की और इस कोर्स से मुझे जो ईश्वरीय ज्ञान और व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ, वह 40 सालों में कहीं से भी, किसी भी पढ़ाई से, किसी भी क्लब या संस्था या स्कूल-कालेज आदि से प्राप्त नहीं हुआ था। सातवें दिन बहन जी ने बड़े स्नेह से हमसे प्रतिदिन सेन्टर में आकर मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनने और मेडिटेशन करने का निवेदन किया और उसी दिन वे सेन्टर से विदा हो गईं।

पुराने ढर्रे पर आ गया

अगले दिन से मैं प्रात: 6.30 बजे प्रतिदिन मुरली सुनने जाने लगा। पाँच-सात दिन तो जाता रहा किंतु सुबह जल्दी उठने की वजह से मैं वहाँ बैठकर झपकियाँ लेता और वापस आ जाता। मुझे मुरली में कुछ भी समझ में नहीं आता था, योग में भी मन एकाग्र नहीं होता था। फिर मैंने जाना बंद कर दिया और उन सात दिनों के अद्वितीय ज्ञान को भी सांसारिक व्यस्तताओं में विस्मृत-सा कर दिया। फिर उसी

पुराने ढर्रे पर प्रात: 9-10 बजे सोकर उठने लगा।

'मैं नहीं हूँ'

इसके पाँच-छह दिन बाद की बात है, मैं और मेरी युगल अखबार पढ़ते हुए चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे, तभी टेलिफोन की घंटी बजी जिसे मेरी युगल ने रिसीव किया। आश्रम की एक बहन मेरे बारे में पूछ रही थी। मैंने युगल की तरफ 'मैं नहीं हूँ' कहने का हाथ से इशारा कर दिया। युगल ने जवाब देने से पहले बहन से पूछ लिया, आपको उनसे क्या काम है? बहन ने कहा, वे कुछ दिनों से सेन्टर पर नहीं आ रहे हैं इसलिए मैंने फोन किया है। युगल ने मैसेज देने का वायदा करके फोन रख दिया।

समझाया मन को

युगल ने मुझसे कहा, आप सेन्टर जाओ, न जाओ, आपकी मर्जी, इसमें बहनों द्वारा घर पर फोन करने की क्या ज़रूरत है? मैं भी सिर हिलाकर

उसकी इस बात पर सहमत हो गया। दो दिन पश्चात् मैं यह सोचकर सेन्टर गया कि बहन जी से कह दूँगा, मेरे बस का नहीं है इतनी सुबह उठना और मुझे कुछ समझ में भी नहीं आता है। जैसे ही सेन्टर में प्रवेश किया, बहन जी सामने खड़ी मुझसे पूछ रही थी, कोहली भाई, आप कुछ दिनों से मुरली की क्लास अटेण्ड नहीं कर रहे हैं, क्या बात है? फिर बड़ी आत्मीयता से बोली, आपको प्रतिदिन मुरली सुनने आना ही है, कोई बहाना नहीं करना है। उनके स्नेह भरे आदेश के आगे मैं कुछ न कह सका। सिर्फ 'जी' कहकर चला आया और रास्ते भर अपने मन को समझाता रहा कि कल सेअवश्य ही मुरली सुनने आना है।

अन्दर था डर

दूसरे दिन से मुरली सुनने जाने लगा, ज्यादा कुछ समझ में नहीं आता था। बापदादा की श्रीमत में सतोप्रधान बनाने वाले कुछ वाक्य सुनकर डर जाता था कि दुनिया के सारे आनन्द, बाज़ार का खान-पान तो मैं कभी छोड़ नहीं सकता हूँ। ये सब छोड़कर भला कोई ज़िन्दगी का आनन्द कैसे ले सकता है? शायद इसी डर से मेरा मुरली सुनने में और योगाभ्यास में ध्यान नहीं लगता था। इसी दरम्यान एक दिन मुरली में बाबा का एक प्वाइंट आया कि **बच्चे, यदि तुम्हें कुछ भी समझ में नहीं आता है तब भी तुम रोजाना प्रातः मुरली सुनने अवश्य आओ, इससे कम से कम तुम्हारी नियमित रूप से अमृतवेले उठने की अच्छी आदत तो बन ही जायेगी।**

जीवन का लक्ष्य ही बदल गया

बाबा के इसी ज्ञान के प्वाइंट को धारण कर नियमित रूप से अमृतवेले उठकर तैयार होकर सेन्टर जाकर मुरली सुनता रहा। बहनों की पालना मिलती रही और **मुझे पता ही नहीं चला, कब, कैसे मैंने अपने विकारों, व्यसनों की बुरी लत को पहचाना, इन्हें छोड़ने का दृढ़ निश्चय किया और बाबा से मिली शक्ति से 22 वर्ष पुरानी शराब के व्यसन की लत छूट गई; भोजन सात्विक हो गया; क्रोध पर विजय पा ली; पहनावा सफेद हो गया; छाती पर ओम शान्ति का गोल्ड मैडल लग गया; दृष्टि, वृत्ति, बोल, संकल्प, संस्कार के साथ-साथ मेरी ज़िन्दगी का लक्ष्य ही बदल गया।**

सात्विक आनन्द प्राप्ति के नये तरीके

आज मुझे जो आनन्द मुरली सुनकर ईश्वरीय नशे में रहने और योग का अमृत रस पीने में आता है वह शराब पीने में नहीं था। जो स्वाद और संतुष्टि दो सादी रोटी खाने में मिलती है, वह बाहरी फास्ट फूड और मांसाहारी भोजन में नहीं थी। जो आनन्द प्रतिदिन बाबा और ईश्वरीय परिवार के साथ मिलने में, समय प्रति समय सेन्टर में होने वाले कार्यक्रमों में शामिल होने और ईश्वरीय सेवा करने में प्राप्त होता है, वह किसी भी क्लब या संस्था के कार्यक्रमों में प्राप्त नहीं होता था। जिस सच्चे प्यार और स्नेह की अनुभूति बाबा के साथ संबंध बनाने से हुई है, वह दुनिया के औपचारिक और झूठे संबंधों में कभी नहीं हुई। अमृतवेले शिवबाबा के साथ मुलाकात करने और वार्तालाप करने में जो सुख मिलता है, वह प्रातः 9-10 बजे तक सोते रहने में कभी नहीं मिलता था।

आज मैं हर क्षण महसूस करता हूँ कि बाबा को मुझे ऐसा बनाना था इसलिए पहले माउंट आबू से बहन को निमित्त बनाकर जबलपुर भेजा और फिर स्थानीय बहन को निमित्त बनाकर घर पर फोन करवाकर बाबा ने स्वयं मुझे बुलवाया।

अनुभव पढ़ने वाले आप पाठकों में से कोई भी यदि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से अभी तक नहीं जुड़े हैं या सेन्टर में रोज़ाना ईश्वरीय महावाक्य सुनने नहीं जाते हैं तो आज से ही सेन्टर में प्रतिदिन मुरली सुनने जाना अवश्य शुरू कर दें। मेरी ही तरह आपके भी कड़े संस्कार एवं विकार पूर्णतः नष्ट हो जायेंगे और मुझे पूरा भरोसा है कि तीव्र पुरुषार्थ द्वारा आप भी अपने शेष जीवन का उच्च लक्ष्य निश्चित कर, जीवन को सफल बनाकर आगे 21 जन्मों की प्रालब्ध पा सकेंगे। ❖

भैया दूज का वास्तविक अर्थ

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

अमावस्या की काली, अंधियारी रात को दीपावली का त्योहार मनाया जाता है और जिस दिन चन्द्रमा के दर्शन होते हैं उस दिन भारत में सर्वत्र भैयादूज या यम द्वितीया का पर्व मनाया जाता है। रक्षाबंधन के पर्व की तरह ही यह भी बहन-भाई के निश्छल प्रेम का प्रतीक है।

पर्व से संबंधित कथा

इस पर्व के संबंध में एक कथा प्रचलित है। कहते हैं, यमुना और यम दोनों बहन-भाई थे। यमुना की शादी मृत्युलोक में हो गई और वह धरती पर बहने लगी। यम को यमपुरी में आत्माओं के कर्मों के हिसाब-किताब देखने और कर्मों अनुसार फल देने की सेवा मिली। यमुना अपने भाई यम को याद करती रहती थी और अपने घर आने का निमंत्रण देती रहती थी। यमराज बहुत व्यस्त रहते थे, रोज़ ही आत्माओं का लेखा-जोखा करना होता था, इसलिए आने की बात को टालते रहते थे। बार-बार बुलावा भेजते-भेजते आखिर एक दिन भाई आने को वचनबद्ध हो गया, वह कार्तिक शुक्ला का ही दिन था।

भाई को घर आया देख यमुना की खुशी का ठिकाना न रहा। बड़े प्यार से, शुद्धिपूर्वक उन्हें भोजन करवाया और बहुत आतिथ्य किया। बहन के निश्छल स्नेह से प्रसन्न होकर यमराज ने वर मांगने को कहा। यमुना ने कहा, मैं सब रीति से भरपूर हूँ, मुझे कोई कामना नहीं है। यम ने कहा, बिना कुछ दिए मैं जाना नहीं चाहता। बहन ने कहा, हर वर्ष इस दिन आप मेरे घर आकर भोजन करें। मेरी तरह जो भी बहन अपने भाई को स्नेह से बुलाए, स्नेह से सत्कार करे, उसे आप सज़ाओं से मुक्त करें। यमराज ने तथास्तु कहा और यमुना को वस्त्राभूषण देकर वापस लौट गए।

इस कहानी का बहुत सुन्दर आध्यात्मिक रहस्य है। हमने भक्ति मार्ग में भगवान को कहा,

'त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव'

भावार्थ यह है कि भगवान को मात-पिता तो माना ही, सखा और भाई भी माना। **एक समय था जब हम आत्मायें और बन्धु रूप परमात्मा – इकट्ठे एक ही घर परमधाम में रहते थे। बाद में हम आत्मायें पृथ्वी पर पार्ट बजाने आ गईं और यमुना नदी की भाँति, जन्म-पुनर्जन्म में, एक स्थान से दूसरे स्थान पर बहती रहीं। परमात्मा पिता का ही दूसरा नाम यमराज भी है। यम का एक अर्थ है कि वे आत्माओं के कर्मों का हिसाब करते हैं और दूसरा अर्थ है, नियम-संयम का ज्ञान देते हैं। दोनों ही कर्त्तव्य परमात्मा के हैं।** आधाकल्प के बाद द्वापर युग से हम आत्मायें अपने पिता परमात्मा को सभी रूपों में, भाई रूप में भी याद करती आई हैं और पृथ्वीलोक में आ पधारने का निमंत्रण देती आई हैं। इस संबंध में एक सुन्दर भजन भी है,

'छोड़ भी दे आकाश सिंहासन
इस धरती पर आ जा रे'।

परंतु वो समय भक्तिकाल का होता है, परमात्मा पिता के धरती पर अवतरण का नहीं। फिर भी वे हमारी पुकार भरी अर्जियों को सुनते रहते हैं, दिल में समाते रहते हैं और कलियुग के अंत में जब पाप की अति हो जाती है तब वे साधारण मानवीय तन का आधार ले अवतरित हो जाते हैं। आधाकल्प की पुकार का फल – परमात्म अवतरण के रूप में पाकर हम आत्मायें धन्य हो जाती हैं। हम धरती पर अवतरित बन्धु रूप परमात्मा को दिल में समाकर, स्नेह से भोग लगाती हैं, उसका दिल व जान से आतिथ्य करती हैं। भगवान हमारे इस स्नेह को देख हमें वरदानों से भरपूर कर देते हैं और कहते हैं, जो आत्मायें धरती पर अवतरित मुझ परमात्मा को पहचान कर सत्कारपूर्वक आतिथ्य करेंगी, मेरी श्रीमत पर चलेंगी, उन्हें मैं सज़ाओं से मुक्त कर दूँगा। इस प्रकार यह त्योहार, परमात्मा के साथ बन्धु का नाता जोड़ने और निभाने का यादगार है।

परमात्मा पिता तो निराकार हैं, साकार शरीर उनका है नहीं, इसलिए कालांतर में बहन शरीरधारी आत्माओं ने, भाई शरीरधारी आत्माओं को तिलक लगाने और मुख मीठा कराने के रूप में इसे मनाना प्रारंभ कर दिया। भगवान के बच्चे हम सब आपस में बहन-भाई हैं। भाई-दूज का त्योहार इस निर्मल नाते को सुदृढ़ करने का आधार है।

यह पर्व दीपावली के तुरंत बाद आता है, इसका भी रहस्य है। दीपावली, श्री लक्ष्मी, श्री नारायण के राजतिलक का यादगार पर्व है। इनके राजतिलक के बाद इस विश्व में, ऐसे भाईचारे का राज्य स्थापित होता है जिसमें नर-नारी तो क्या, गाय-शेर तक भी इकट्ठे जल पीयेंगे। यह मान लीजिए कि गाय और शेर में भी बहन-भाई का निर्मल नाता स्थापित हो जायेगा। भावार्थ यही है कि मानव, पशु, प्राणी, प्रकृति सभी स्नेहपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

परमात्मा पिता से भ्रातृ नाता जुड़ाने वाले, सतयुगी भ्रातृभाव की झलक दिखाने वाले इस भैयादूज के पर्व पर हमारी सर्व आत्मा रूपी भाइयों के प्रति यही शुभकामना है कि धरती पर अवतरित धर्मराज भगवान को पहचान कर, उनकी श्रीमत पर चलते हुए आप सभी प्रकार की सज़ाओं से मुक्त हो जायें। ❖

दिल से कहो, मेरा बाबा

सीमा मित्तल, राजपुर रोड, दिल्ली

मेरा विवाह सन् 1997 में ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े एक परिवार में हुआ। मैं ईश्वरीय ज्ञान से धीरे-धीरे परिचित होने लगी। मेरी सास माताजी 40 वर्षों से ज्ञान में चल रही हैं, बाबा की संदेशी बच्ची हैं, उनसे मुरली समझना शुरू किया। धीरे-धीरे मुरली पढ़ना, योग करना बहुत अच्छा लगने लगा और मैं भी बाबा के स्नेही-सहयोगी बच्चों में शामिल हो गई।

बाबा मुरलियों में कहते हैं कि बच्चे, मैं तूफान को तोहफा बना देता हूँ। बाबा के इन शब्दों को मैंने जीवन में अनुभव किया। क्रिसमस दिवस 2010 सुबह माताजी भोग बना रही थी। कुकर में राजमा उबल रहे थे। मैंने जैसे ही गैस बंद की, कुकर फट गया, छत पर जाकर लगा, छत टूट गई। उबलते हुए राजमा मेरे दाहिनी तरफ के मुँह पर आकर चिपक गए और एक आँख बुरी तरह जल गई। मैं दर्द से तड़पती हुई इधर-उधर भागने लगी, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तभी माताजी बाबा के कमरे में गई और बाबा को पुकारने लगी कि बाबा, आओ और अपनी बच्ची को संभालो। बाबा ने तुरंत उत्तर दिया कि बच्ची की आँख को कुछ नहीं होगा, बाबा ने अपने हाथ बच्ची की आँखों के आगे लगा लिये हैं। जब माताजी ने यह संदेश सुनाया तो दिल को तसल्ली हुई और दर्द भी कुछ कम महसूस होने लगा। बाबा के कमरे में बैठकर ऐसा लगा कि जैसे सारी जलन और दर्द गायब हो गया है। आँख के डॉक्टर को दिखाया तो उसने कहा कि आँख, पुतली तक 70% जल गई है परंतु ठीक हो जायेगी। आधा मुँह जलकर काला पड़ चुका था लेकिन बाबा का चमत्कार ऐसा हुआ कि पाँच दिनों के अंदर ही सारी त्वचा ठीक-ठाक हो गई तथा अधिक साफ नज़र आने लगी। जो भी हाल पता करने आते थे, पूछते थे कि चोट कहाँ लगी, क्या सर्जरी करा ली है? परंतु एक ही जवाब मेरे पास था कि सबसे बड़ा डॉक्टर, सबसे बड़ा हीलर और सबसे बड़ा सर्जन जब घर में बैठा है तो और किसी की क्या ज़रूरत? शिवबाबा को लाखों-लाख शुक्रिया! अब तो हर वक्त बाबा मेरे साथ है। हर कोई दिल से कहे, मेरा बाबा। ❖

सुनामी बनाम शिवनामी

● डॉ. बृजेश गुप्ता, ग्रेटर नोयडा

जलजला जो ज़मीं पे आया,
वो अपना जलवा दिखा गया।
चारों तरफ जल ही जल था ज़मीं पर,
पर वो मंज़र आँखों का जल सुखा गया।।

गत 11 मार्च 2011 को जापान के उत्तर पूर्वी इलाकों में भूकंप के बाद जबर्दस्त सुनामी आई। इससे पहले भी 26 दिसंबर 2004 में आये भूकंप से हिन्द महासागर में पैदा हुई सुनामी लहरों की विनाशलीला विश्व की सबसे बड़ी त्रासदियों में गिनी जाती है। माना जाता है कि आधुनिक युग की पहली सुनामी आपदा हिंद महासागर में आई थी और इसका केन्द्र इंडोनेशिया के पास था।

समुद्र के अंदर अचानक जब बड़ी तेज हलचल होने लगती है तो उसमें उफ़ान आता है। इससे ऐसी लंबी और बेहद ऊँची लहरों का रेला उठना शुरू हो जाता है जो ज़बर्दस्त आवेग के साथ आगे बढ़ता है। इन्हीं लहरों के रेले को सुनामी कहते हैं। दरअसल सुनामी जापानी शब्द है जो सु और नामी से मिलकर बना है। सु का अर्थ है समुद्र तट और नामी का मतलब है लहरें।

समुद्र में लहरें सूरज, चांद और ग्रहों के गुरुत्वाकर्षण प्रभाव से उठती हैं लेकिन सुनामी लहरें उन आम लहरों से अलग होती हैं। सुनामी की उत्पत्ति को चार निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया जा सकता है –

1. समुद्र के अंदर भूकंप एक ही झटके में ढेर सारा पानी विस्थापित करता है।
2. लगभग 480 मील प्रति घंटे की रफ्तार से बड़ी लहरें समुद्र में उठने लगती हैं।
3. किनारों पर पहुँच कर लहरें रुकावट की वजह से ऊँची हो जाती हैं।
4. इसके बाद लहरें तेज गति से किनारे बसे इलाकों में भीषण तबाही मचा देती हैं।

भूकंप की तरह सुनामी के बारे में भी भविष्यवाणी करना मुश्किल है लेकिन पिछले आँकड़ों के आधार पर यह अवश्य कहा जा सकता है कि पृथ्वी की जो प्लेट्स या परतें जहाँ-जहाँ मिलती हैं वहाँ के आसपास के समुद्र में सुनामी का खतरा अधिक होता है। उदाहरणार्थ, आस्ट्रेलिया परत जहाँ मिलती है वहाँ स्थित है सुमात्रा जो कि दूसरी तरफ फिलीपिनी परत से जुड़ा है। सुनामी लहरों का कहर वहाँ भयंकर रूप में देखा जा चुका है।

हमारे यहाँ एक प्रसिद्ध धार्मिक गीत की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

'सुबह-सुबह ले शिव का नाम, कर ले बंदे यह शुभ काम
सुबह-सुबह ले शिव का नाम, शिव आयेंगे तेरे काम'

इन पंक्तियों को लिखने का अभिप्राय लेख के शीर्षक 'सुनामी एवं शिवनामी' में संबंध स्थापित करना है।

जैसा कि लेख के प्रारंभ में सुनामी (सु = समुद्र तट) + (नामी = लहरें) का अर्थ समुद्र तटीय लहरें बताया गया है, ठीक उसी प्रकार शिवनामी अर्थात् भगवान 'शिव' की लहरें। 'शिव' परमात्मा को विश्व के समस्त धर्मों की आत्मायें किसी न किसी रूप से परमपिता स्वीकार करती हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से परमात्मा शिव पिछले 75 वर्षों से वर्तमान विश्व की परिस्थितियों एवं समस्याओं के प्रति भविष्यवाणी एवं नव विश्व के आगमन का शुभ संदेश (शिवनामी के रूप में) समस्त विश्व में प्रसारित कर रहे हैं।

समुद्र की शक्तिशाली सुनामी लहरें जहाँ समय प्रति समय विश्व के विनाश का कारण बनती जा रही हैं वहीं सर्वशक्तिमान शिव परमात्मा की 'शिवनामी' अर्थात् कल्याणकारी लहरें मानव चेतना में दिव्य बल भरकर उसे जन्म जन्मांतर के लिए विकास के पथ पर अग्रसित कर रही हैं। **(शेष.. पृष्ठ 34 पर)**

स्वर्ण-मृग प्रसंग

● ब्रह्माकुमार लोकपाल, टीकमगढ़

भारत के धार्मिक जनमानस ने राम-कथा कई बार सुनी है। इसमें स्वर्ण-मृग वाले प्रसंग को भी सभी जानते हैं। हमारी प्राचीन कथाएँ केवल कथाएँ नहीं हैं वरन् उनके हर प्रसंग में मानव के प्रति बुराई, धोखे, आकर्षण के जाल से बचने की प्रेरणा या इसी प्रकार की अन्य प्रेरणाएँ छिपी रहती हैं।

पंचवटी में स्वर्ण-मृग द्वारा सीता को छल लिए जाने की घटना में भी हम सबके लिए आँखों द्वारा धोखा न खाने की प्रेरणा है। पंचवटी वास्तव में मानव का शरीर है जो पांच तत्वों से बना है। इस शरीर में आत्मा रूपी सीता विराजमान है। देह में रहते वह एक तरफ तो भगवान (राम) की प्यार भरी स्मृति से कभी अलग नहीं होती है और दूसरा उसका मन अपने लक्ष्य (लक्ष्मण) पर भी टिका रहता है। राम और लक्ष्मण के साए में इस प्रकार आत्मा रूपी सीता सुरक्षित है।

कहा जाता है, आँखें बड़ी धोखेबाज हैं। लगभग 85% गलत कार्य आँखों के धोखा खाने से होते हैं। कथा में आता है कि सीता रूपी आत्मा की आँख भी स्वर्ण मृग पर आकर्षित हो गई। वह भूल गई कि सभी चमकने वाली चीज़ें सोना नहीं होतीं इसलिए चमकते शरीर वाले मायावी मृग को सचमुच सोने का मृग मान बैठी। आँख ने देखा, मन ने साथ दिया, बुद्धि कमज़ोर पड़ गई, इस प्रकार आत्मा बंधक बन गई। इंद्रियों की बंधक बनी आत्मा ने भी मृग-मृग की रट लगा दी और इस कुप्रयास में उसने पहले तो भगवान को अपने से दूर कर दिया अर्थात् भगवान को भूल गई। भगवान को भूलने के बाद भी यदि आत्मा लक्ष्य पर मन को टिकाए रखे तो उसकी रक्षा हो सकती है परंतु बाद में लक्ष्य से भी मन हटा लिया अर्थात् लक्ष्मण को भी राम के पीछे जाने के लिए मजबूर कर दिया। इस प्रकार सीता रूपी आत्मा असुरक्षित और बेसहारा हो गई।

इसके बाद व्यक्ति की अपनी मर्यादा रेखाएँ होती हैं जो उसे बुराई के अधीन होने से रोकती हैं परंतु प्रभु विस्मृति और लक्ष्यहीन मन में रावण रूपी पांच विकारों का ऐसा आगमन हुआ कि मर्यादा रेखा भी उलांघी गई, बेबस आत्मा रावण के पराधीन हो गई। रावण का अर्थ है रुलाने वाला। उसके दस सिर हैं नर-नारी के पांच-पांच महाविकारों के प्रतीक। आज के संसार में सभी आत्मा रूपी सीताएँ इस दसमुखी रावण (विकारों) की कैद में

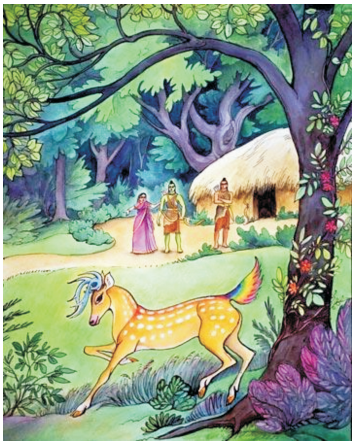

पड़ी कराह रही हैं। अशोक वाटिका वास्तव में यह कलियुगी दुनिया ही है जिसमें कदम-कदम पर दुख और शोक है।

अशोक वाटिका बनाम शोक वाटिका में फँसी आत्मायें पुकार रही हैं, हे भगवान आओ, हमें रावण (बुराइयों) की कैद से छुड़ाओ। यूँ तो आत्मायें दो युगों (द्वापर-कलियुग) से भगवान को याद कर रही हैं पर अब तो यह पुकार इतनी बढ़ गई है कि भगवान को भी बेचैनी होने लगी और वे मानवी तन में अवतरित हो गये। उन्होंने देखा, उनके मंदिर तुल्य देवता अब बंदर तुल्य बनकर सर्व विकारों के अधीन हो चुके हैं। उन्होंने इन्हीं बंदरबुद्धि बनी आत्माओं को ज्ञान-बल, रूहानी स्नेह-बल से एकत्रित कर अहिंसक सेना बना ली जिसे नाम दिया शिवशक्ति पांडव सेना। भगवान अपनी सेना की मदद से पिछले 75 वर्षों से, शोक वाटिका के हर कोने में रावण के चंगुल में फँसी आत्माओं

को मुक्त कर रहे हैं। आप भी ऐसी किसी आत्मा को जानते हैं तो उसे भगवान शिव (निराकार राम) के धरती पर आगमन की शुभ सूचना अवश्य दे दीजिए। भगवान उसे छुड़ाकर अयोध्या (जहां कभी किसी प्रकार का युद्ध न हो) वासी बना देंगे। वास्तव में आने वाली सतयुगी सृष्टि का नाम ही अयोध्या है जहाँ मानव तो क्या गाय-शेर भी एक घाट पर पानी पीयेंगे।

इस प्रकार यह प्रसंग आज की स्थिति का ही यादगार प्रसंग है। इस कथा के रसिक इसे केवल जानने और सुनने की रीति से ना सुनें बल्कि अपने अंतर्मन में गहराई से झांके कि वे किसी आकर्षण में फंसकर भगवान से और जीवन के लक्ष्य से भटक तो नहीं रहे हैं, किसी मर्यादा का उल्लंघन तो नहीं कर रहे हैं?

❖

प्रभु संग की मर्मस्पर्शी अनुभूति

ब्रह्माकुमारी संध्या, बर्णपुर (प.बंगाल)

जब से हम ईश्वरीय संप्रदाय के बने, तब से परमात्म प्यार के साथ-साथ उच्च आदर्शों और शिक्षाओं से पालना मिलती रही और मेरी कार्यशैली भी आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों में बँधकर विकसित होती गई। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का ज्ञान बड़ा उच्च है। यहाँ की असाधारण विशेषता है यहाँ का सार्वभौमिक पारिवारिक संगठन। मुझे खुशी है कि मैं पिछले कई सालों से इस मीठे परिवार की सदस्या हूँ।

अठारह जनवरी, 1990 में, प्रथम परमात्म-दृष्टि पड़ते ही मेरी संशयबुद्धि, प्रीतबुद्धि में बदल गई। मैंने बाबा को एकटक देखा और उनकी बेहद आँखों में अपने प्रति असीम प्यार पाया। बाबा मुझे आँखों से कशिश करते रहे, मैं हलकी होती गई। ज्ञान की किरणों के समावेश से मेरी भावनायें ईश्वरानुकूल हो गईं। मैंने अनुभव किया कि बुद्धि का तार ज्ञान-सागर परमात्मा से जुड़ने पर यह कीचड़ से किनारा कर लेती है। उस प्रथम मिलन में मेरे सर्वसंबंध उस प्रीतम से जुट गये।

अब मेरा सर्वस्व परमात्मा है। वह मेरे पथ का सहचर है। **उसके साथ की मेरी अनुभूति मर्मस्पर्शी है। वह बहुत रहमदिल है। मैंने देखा है, चोट हमें लगती है लेकिन तकलीफ उसे होती है। वह अपने बच्चों को हर हाल में सुरक्षित रखता है।** ईश्वरीय फरमान पर चलकर मैंने महसूस किया है कि वह अपने बच्चों की कदम-कदम पर मदद करता है। कभी बच्चों की ज़िद्द पर उनकी छोटी-छोटी स्थूल बातें भी मान लेता है। हमारी गलतियों को नादानी समझ माफ कर देता है। वह हमें कितना कुछ सिखाता है। उनमें से कुछ शिक्षायें भी जीवन में उतर जायें तो संस्कार निखर जायें, चरित्र निर्मल हो जाये। उसके प्यार की उपमा इस जहां में कहीं भी नहीं है। उसका नि:स्वार्थ स्नेह हमें यज्ञ और सेवा प्रति कृतज्ञ कर देता है।

जिसका साथी परमात्मा बनता है, उसका जीवन कीमती बन जाता है। **प्रभु-प्रेम की एवज में अविनाशी खजानों की चाबी उसे मिलती है। जहाँ परमात्मा का सकाश है, वहाँ दुख-दर्द की लहर तक नहीं आ सकती। मैंने देखा, परमात्मा की भासना से मधुबन मुसकराता है। यहाँ रात्रि के सन्नाटे में भी पवित्रता की ज्योति झिलमिलाती है। यहाँ की प्रकृति भी प्रभु-प्रेम में पलती है।** कहना अयथार्थ न होगा, यह वरदानी भूमि स्वर्ग से भी अनुपम है। मधुबन इतना विशालकाय है कि परमात्मा अपनी हजारों-हजारों भुजायें फैलाकर विश्व की करोड़ों-करोड़ों आत्माओं को यहाँ समा सकता है। मेरा पूरा जीवन रूहानी सेवार्थ समर्पित है। ❖

अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर विशेष..

वृद्धावस्था बनाम वृहद आस्था

● ब्रह्माकुमारी सुमन, अलीगंज

युवाओं को ऊर्जा का पर्याय तो कहा जा सकता है पर उनके पास अनुभव का बल कहाँ? जीवन की सच्चाइयों का ज्ञान कहाँ? वृद्ध अवस्था माना वरद अवस्था, वृहद आस्था। आत्मा न कभी बूढ़ी होती है, न जवान होती है। बूढ़ा तो शरीर होता है, शरीर रूपी वस्त्र पुराना होने से व्यक्ति थोड़े ही पुराना हो जाता है। बस, पुराने कपड़े को संभाल कर प्रयोग करने की जरूरत होती है। **अगर दिल में जीने का उत्साह है, कुछ देने की प्रबल प्रेरणा है, अनुभव रूपी जागीर को बांटने की उत्कंठा है तो व्यक्ति कभी भी बूढ़ा नहीं हो सकता, न ही उसे बूढ़ा कहा जा सकता है बल्कि उसे तो बढ़ा हुआ कहेंगे।**

क्या खास है इस चौथे पड़ाव में?

आज तक सुनते आये कि ज्ञान-ध्यान साठ वर्ष के बाद सुनना चाहिए (हालांकि आज यह सबकी आवश्यकता हो गई है), तो कुछ तो होगा इस उम्र में। जीवन के चौथे पड़ाव में कुछ खास व अद्भुत होने के कारण ही लोगों ने इसका चयन किया होगा। इसके पीछे एक कारण तो है, पारिवारिक कर्त्तव्य को संपन्न कर

निश्चिन्त जीवन होना। दूसरा कारण है, जीवन की सच्चाइयों से पूर्णतया अवगत होना क्योंकि अनुभवी कभी धोखा नहीं खा सकता। अनुभव करने के बाद अर्थात् व्यक्ति, वैभव, पदार्थ, देह सबका झूठा रस चख लेने के बाद आसक्ति खत्म हो जाती है, अत: उम्र के इस पड़ाव में भगवान में मन लगाना सहज हो जाता है। तीसरा कारण यह भी है कि कर्मेन्द्रियों में चंचलता नहीं, उतावलेपन का रोग नहीं, प्रतिस्पर्धक वृत्ति नहीं, ईर्ष्या-द्वेष की बीमारी नहीं, बदले की भावना नहीं, उत्तेजना का कहर नहीं, ऐसी अवस्था में भगवान की याद सहज प्राप्ति करा देती है।

वृद्धों से मांगा जाता है आशीर्वाद, क्यों?

कभी भी बड़े व्यक्ति को छोटे बच्चे से आशीर्वाद लेने के लिए नहीं कहा जाता जबकि छोटा बच्चा पवित्र भी होता है और महात्मा कहलाता है। कारण साफ है, बच्चे में निर्मलता का बीज तो है पर परोपकार की धरनी नहीं है, सत्यता की धूप तो है पर स्नेह का पानी नहीं है, करुणा का सहयोग नहीं है, कुटिलता व जटिलता रूपी काँटे नहीं हैं पर शुभ भावना की खाद भी तो नहीं है, अहंकार का कीड़ा नहीं है पर दायित्व का बोध भी तो नहीं है, सरलता की ऊर्जा तो है पर गंभीरता की ऊष्मा नहीं है। यही कारण है कि लोग बुजुर्गों से ही आशीर्वाद लेने के इच्छुक रहते हैं। इतना संपन्न जीवन जिसके पास हो, एक गरिमापूर्ण अतुलनीय व्यक्तित्व का जो धनी है, ऐसा वृद्धजन अपने अनुभवों का सदुपयोग करके संपर्क में आने वालों को लाभान्वित अवश्य करे। इससे हरेक से दुआयें प्राप्त कर पुण्य का खाता बढ़ा सकते हैं। ऐसी अद्भुत प्राप्तियों से भरपूर वृद्धावस्था माननीय और सम्मानीय है।

प्रजापिता ब्रह्मा के तन को जब शिव परमात्मा ने अपना आधार बनाया तब उनकी उम्र 60 वर्ष थी, संपूर्ण तमोप्रधान स्थिति से संपूर्ण सतोप्रधान स्थिति तक पहुँचने का

पुरुषार्थ प्रजापिता ब्रह्मा ने 60 वर्ष की उम्र के बाद ही किया और संपूर्ण विकर्माजीत व विकारजीत स्थिति को प्राप्त कर लिया। **जब प्रजापिता ब्रह्मा कर सकते हैं तो अन्य भी कर सकते हैं। जब कोई एक कर सकता है तो दूसरा भी कर सकता है। आत्मबल और परमात्म बल अगर साथ हों तो कोई भी कार्य असंभव नहीं।** सर्वशक्तिमान परमात्मा हमारा प्यारा पिता है, वह ज्ञान के साथ प्रेम व करुणा का भी सागर है। जब भगवान साथी है तो असंभव कार्य भी संभव हो जायेंगे, आवश्यकता सिर्फ कदम बढ़ाने की है। अभी तक हम वही करते आये जो मन ने कहा, अब ज़रा वो कर लें जो भगवान कह रहा है। जीवन के सफर के अंतिम क्षणों में उसको अपना साथी बनाकर एक बार उसकी मत पर चलकर देख तो लें। कहा गया है –

हर मंजिल दस्तक देती है,
पुरुषार्थ की उत्तम रेखा पर।
तकदीर स्वतः ही बदलती है,
सत्कर्मों की अभिलेखा पर।।

❖

हम भी दें बीती को विराम

सरदार वल्लभ भाई पटेल फौजदारी के सुप्रसिद्ध वकील थे। एक बार वे अदालत में एक मुकद्दमे की पैरवी कर रहे थे। प्रकरण काफी जटिल था। थोड़ी-सी भी असावधानी से अभियुक्त को फाँसी की सज़ा हो सकती थी इसलिए वे गंभीर होकर सवाल-जवाब कर रहे थे। उसी समय एक व्यक्ति, पटेल जी को एक तार देकर गया। उन्होंने तार खोलकर पढ़ा और पुनः पैरवी करने में मग्न हो गये।

जब अदालत उठी तो वे घर की ओर चलने लगे। एक साथी वकील ने पूछा, 'क्या बात है, तार किसका था?' पटेल जी ने कहा, 'मेरी पत्नी का देहांत हो गया। तार उसी के बारे में था।' वकील ने आश्चर्य से कहा, 'कमाल है, वहाँ इतना बड़ा हादसा हुआ है और आप यहाँ बहस करने बैठे हो!' पटेल जी ने कहा, 'करता भी क्या! वह (पत्नी) तो जा चुकी थी, क्या उसके पीछे इस अभियुक्त को भी जाने देता?'

पटेल जी के बोल दर्पण हैं उनके सामने जिनका जीवन वर्तमान की वास्तविकता को छोड़कर भूतकाल की बीती हुई बातों की ज़ंजीरों में बंधा हुआ है। बीती हुई बातों की स्मृति हमारे अमूल्य समय को नष्ट कर हमें वर्तमान के पुरुषार्थ और भविष्य की प्रालब्ध से वंचित कर रही है। **हमें अपने से यह प्रश्न पूछना चाहिए, जब सरदार पटेल जी पत्नी की मृत्यु जैसी घटना के चिंतन को विराम दे अभियुक्त को फाँसी से छुड़ा सके तो क्या हम अपने ही भविष्य को चमकाने के लिए, स्वयं को ही पश्चाताप की सज़ाओं से छुड़ाने के लिए बीती बातों पर पूर्ण विराम रख आगे नहीं बढ़ सकते?**

इस पूर्व नियोजित सृष्टि नाटक के हर सेकंड को बीती सो बीती कर आगे बढ़ना ही पुरुषार्थ को निर्विघ्न बनाने और निश्चित सफलता पाने की सहज विधि है।

ब्रह्माकुमार विनायक, आबू पर्वत

जो व्यक्ति अपना मालिक हो जाता है, उसकी मालकियत की इच्छा खो जाती है, लेकिन हम अपने मालिक नहीं हैं और उसकी कमी हम ज़िंदगी भर दूसरों के मालिक होकर पूरी करना चाहते हैं।

स्नेही पाठकों को आत्मा रूपी दीपक को प्रकाशित करने के यादगार पर्व दीपावली की कोटि-कोटि हार्दिक शुभ बधाइयाँ

राजयोग से कायाकल्प

● ब्रह्माकुमार ओ.पी.पाण्डेय, कानपुर

भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय से सेवा-निवृत्ति के बाद मैं आत्म-संतुष्टि में दिन गुज़ार रहा था परंतु अभी एक वर्ष भी पूरा नहीं हुआ था कि मेरी इन खुशियों पर ग्रहण लग गया। मुझे सूचना मिली कि छोटे भाई के जिस लड़के को मैंने अपने पास शहर में रखकर पढ़ाया-लिखाया था, उसने मेरे पिताजी की बीमारी की हालत में, धोखे से गाँव की पूरी संपत्ति की निबंधित वसीयत अपने नाम तैयार कराकर मुझे पूरी तरह से बेदखल करने का इंतजाम किया हुआ है। इस अन्याय एवं गृह-कलह की नींव से मैं इतना पीड़ित हो गया कि मुझे संसार से विरक्ति होने लगी जिससे स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरने लगा और शरीर में अनेक बीमारियों जैसे अवसाद, मानसिक तनाव, डायबिटीज़ एवं उच्च रक्तचाप वगैरह ने अपना अड्डा जमा लिया। फिर भी मैं तीन महीने तक गाँव में रहकर इन परेशानियों के निराकरण हेतु जूझता रहा। पुन: शहर आया तो मेरी इस कहानी को सुनकर मेरे एक मित्र ने मुझे हर गुरुवार को साईं दरबार जाकर मत्था टेकने की सलाह दी और आश्वस्त किया कि ऐसा करने से मेरी हर समस्या का समाधान अवश्य हो जायेगा।

परमपिता परमात्मा स्वयं पढ़ाते हैं

एक दिन जब मैं साईं दरबार से लौटकर घर आ रहा था तभी रास्ते में मुझे एक मकान की चार दीवारी पर स्लोगन और मुख्य द्वार पर 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय सेवाकेन्द्र' का बोर्ड दिखाई पड़ा। जून महीने का सायं 5 बजे का समय था। मुझे लगा, मुझे वहाँ से कोई पुकार रहा है कि आओ, आपकी समस्याओं का समाधान यहाँ है। मैं जिज्ञासावश वहाँ पहुँचा, मैंने देखा कि एक तेरह-चौदह वर्ष की भोली-भाली मासूम बालिका मानो मेरा इंतज़ार कर रही थी। मेरे पहुँचते ही बोल पड़ी, क्या आप मुझसे यह जानना चाहते हैं कि यहाँ क्या होता है और एकाएक मेरे मुख से 'हाँ' सुनकर उस बालिका ने जो बताया, उसने मुझे अंदर तक चमत्कृत कर दिया। उसने बड़ी ही मासूमियत से कहा, **आप नहीं जानते, यहाँ हम लोगों को रोज़ परमपिता परमात्मा स्वयं आकर पढ़ाते हैं और हम रोज़ाना उनसे मिलन मनाते हैं।** इन वाक्यों को सुनकर मैं ठगा-सा रह गया कि आज तक यह तो किसी ने भी नहीं बताया कि परमात्मा स्वयं आकर पढ़ा सकते हैं और उनसे मिलन भी मनाया जा

सकता है। अभी इन विचारों से मैं बाहर निकल भी नहीं पाया था कि उस बालिका ने पुन: कहा, आइये, अंदर आकर बैठ जाइये, दीदी सायं 6 बजे आएंगी, तब वे इस सेवाकेन्द्र के विषय में विस्तार से बताएंगी।

दुखों की जड़ है स्वयं का अज्ञान

संकोचवश उस समय मैं पुन: आने को कहकर वापस घर आ गया। सायं 6 बजे पुन: सेवाकेन्द्र पर गया और ज्ञान-कक्षा में बैठा तो अद्भुत शान्ति का अनुभव हुआ। फिर निर्मल धवल वस्त्रों से सुसज्जित चैतन्य देवी स्वरूप निमित्त बहनजी कक्षा में प्रकट हुईं। मुझ अपरिचित को एक सप्ताह का कोर्स करने की सलाह दी, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार कर उसी दिन से प्रारंभ कर दिया। नियमित कोर्स करते हुए ही मुझे महसूस होने लगा कि दुख अथवा सुख मनुष्य के स्वयं के दृष्टिकोण पर आधारित है और सारे दुखों की जड़ स्वयं का अज्ञान है।

साप्ताहिक कोर्स के अंतिम दिन कॉमेन्ट्री द्वारा राजयोग का अभ्यास कराया गया। मुझे स्व की एवं स्व की शक्तियों की पहचान हुई। मैं सांसारिक मायाजाल में उलझकर अपने असली स्वरूप को विस्मृत कर बैठा था, वह जागृत हो गया। मेरे अंदर ऐसी शक्ति उभरने लगी जिसने मेरा कायाकल्प करना प्रारंभ कर दिया। मेरी समस्त परेशानियाँ उसी दिन से अपने आप धीरे-धीरे समाप्त होने लगी। इसी बीच मेरी युगल भी सेवाकेन्द्र पर जाने लगी और उन्होंने भी साप्ताहिक कोर्स पूरा किया।

स्वास्थ्य में सुधार

कोर्स के उपरांत जब मैं अपनी युगल के साथ नियमित रूप से मुरली कक्षा में अविनाशी ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ने लगा तब मुझे उस बालिका के कहे हुए वाक्यों की प्रमाणिकता नज़र आने लगी। साथ-साथ, अमृतवेले परमपिता परमात्मा शिव से मिलन मनाने से, दिनचर्या में भी राजयोग का अभ्यास करने से मेरे स्वास्थ्य में सुधार आता गया। **मुरली के सार, वरदान और स्लोगन का मेरे ऊपर नशा रहने लगा जिसने मेरा कायाकल्प कर दिया। राजयोग के अभ्यास से शरीर रोगों के अड्डे से मुक्त हो गया और गृह कलह तथा पैतृक संपत्ति का विवाद भी सुलझने लगा। इस तरह बाबा के ज्ञान को पाकर मैं धन्य हो उठा।**

मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म में डिप्लोमा

लगभग 6 महीने के पश्चात् जब मैं दीदी जी के साथ बाबा से मिलन मनाने शान्तिवन आया तो यहाँ के वातावरण को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया। दादियों की पवित्रता, सौम्यता एवं सरलता को देखकर ऐसा लगा जैसे कि मुझे सचमुच एक नई दुनिया में प्रवेश पाने का पासपोर्ट मिल गया है। बाबा से मिलन मनाने के पश्चात् जो भोग मैंने उस दिन ग्रहण किया उसका प्रभाव मेरे जीवन में एक संजीवनी बूटी के रूप में हुआ जिससे सारी व्याधियाँ सदैव के लिए मुझसे किनारा कर गई। राजयोग से मेरा इतना कायाकल्प हुआ कि 68 वर्ष की अवस्था में हर प्रकार की चुनौतियों एवं विषम परिस्थितियों से जूझते हुए मुझे 'मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म' में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त हुआ जिसने मेरी आध्यात्मिक शक्तियों के विकास के सभी बंद कपाट खोल दिये। बाबा ने मुझे धन्य कर दिया है। राजयोग अभ्यास एवं ज्ञान द्वारा, सचमुच, मानव का नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी के रूप में परिवर्तन होना निश्चित है। अंत में यही कहूँगा –

राजयोग की विशिष्ट है महिमा,
पहनाए ज्ञान-रत्नों का हार।
काया-कल्प करे जन-जन का,
खुलता अमर लोक का द्वार।।

विशेष सूचना

आप सबको बताते हुए अति हर्ष हो रहा है कि अप्रैल 2011 में जब ज्ञानामृत की 'ज्ञान-दान योजना' शुरू की गई थी तब ज्ञानामृत की प्रकाशन संख्या 2 लाख 10 हजार थी परंतु आप सबके उमंग भरे सहयोग से, सितंबर मास आने तक ज्ञानामृत की प्रकाशन संख्या बढ़कर 3 लाख 50 हजार हो गई है। ब्रह्मावत्सों की ज्ञान-दान की लगन का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है कि मात्र चार मास में 1 लाख 40 हजार की वृद्धि हो गई है।

मधुबन के कार्यक्रमों में आने वाले नये-नये भाई-बहनें भी बहुत उमंग से इसे पढ़ते और सदस्य बनते हैं। अभी नवरात्रे, दशहरा, दीवाली, भाई दूज आदि त्योहार हमारे सामने हैं। ये सभी त्योहार अज्ञान अंधकार पर ज्ञान द्वारा विजय पाने के प्रतीक हैं। तो आइये, 'ज्ञानामृत' के पुनीत ज्ञान का इन त्योहारों के उपलक्ष्य में दान करें। सेवाकेन्द्रों पर देवियों की झांकी अवलोकन करने आने वालों को ज्ञानामृत रूपी ज्ञान का तीसरा नेत्र अवश्य प्रदान करें। पुरानी ज्ञानामृत सफल करते हुए, नये सदस्य बनायें।

संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन

● ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश, आबू पर्वत

संस्कार परिवर्तन एक कला है। यदि मनुष्य के संस्कार बदल जायें तो उसे देवता बनने में देर नहीं लगती है। आज जो भी लड़ाई-झगड़े हैं, उन सबका प्रमुख कारण संस्कारों की टक्कर ही तो है। बच्चों के भटकाव का मूल कारण भी यही है कि हम बच्चों को शिक्षा तो देते हैं लेकिन दीक्षा नहीं देते। वास्तव में युवाओं को आज शिक्षा के साथ-साथ संस्कारी बनाने की भी ज़रूरत है।

भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली रहा है। इस महान देश की परम्परा ही सहनशील और सहयोगी बनने की रही है। भारतीय गुरुकुल परम्परा भी बच्चों के चरित्र-निर्माण और उनके जीवन में दिव्यता के बीजारोपण की परिचायक रही है। आज परिवर्तन की बात तो सभी करते हैं लेकिन यह बदलाव कैसे आयेगा, इसका किसी को भी पता नहीं है। समूची मानवता भटकाव के कगार पर है। हर व्यक्ति असमंजस में है। ऐसे घटाटोप में स्वयं परमात्मा अवतरित होकर, संस्कारों के परिवर्तन की सहज, सरल विधि हमें सिखाते हैं।

वास्तव में राजयोग कुछ और नहीं अपितु संस्कारों को बदलने की विधि ही है। राजयोग के नित्य-प्रति अभ्यास से हमारे कड़े-से-कड़े संस्कार भी बदल जाते हैं और जीवन खुशी और आनन्द से भरपूर हो जाता है। आज तनाव, अवसाद, चिंता, अनिद्रा आदि रोगों ने सबको अपनी गिरफ्त में ले लिया है। इनसे मुक्ति का एकमात्र साधन राजयोग ही है। तभी तो कहते हैं, योग भगाये रोग। हमारे संस्कार बदलने से ही संसार बदलता है। नये संस्कारों से ही नये विश्व का निर्माण होता है।

संस्कार परिवर्तन की विधियाँ

1.अपने मूल संस्कारों की स्मृति : हमारे आदि और अनादि संस्कार कितने श्रेष्ठ थे। आत्मा सम्पूर्णता और

सम्पन्नता से परिपूर्ण थी। वस्तुत: मेरे आदि संस्कार तो देवता अर्थात् देने के थे, इसलिए ही सतयुग में सुखों की पराकाष्ठा थी लेकिन लेने के संस्कारों ने हताश और निराश किया है। यदि यह याद रहे कि मुझे अपने ही असली संस्कारों को अपनाना है, अपनी विस्मृत चीज़ को धारण करना है तो अवश्य ही संस्कार परिवर्तन सम्भव हो जायेगा और नवनिर्माण का कार्य सम्पन्न हो जायेगा।

2. यह परिवर्तन वेला है – समय की पहचान : समय हरेक इंसान को बदल देता है। प्यारे परमात्मा पिता ने हमें समय की पहचान दी है कि मीठे बच्चे, यह परिवर्तन की वेला है। बाल्यकाल में हमने 'उत्तरोत्तर की जीविता' का सिद्धांत पढ़ा था, जिसका सार यही था कि प्रकृति में निरन्तर परिवर्तन आते रहते हैं और जो जीव-जन्तु उन बदलावों को नहीं अपनाते, प्रकृति उन्हें नष्ट कर देती है। ठीक यही बात अब हमारे पर भी लागू होती है। स्वयं शिव

बाबा इस समय धरा पर ब्रह्मा-तन में अवतरित होकर महापरिवर्तन की प्रक्रिया को अंजाम दे रहे हैं और यदि इस भागीरथ कार्य में मैं शामिल नहीं हुआ तो मुझे लाभ से वंचित रहना होगा। चूँकि समय परिवर्तन का चल रहा है अत: मुझे भी अब स्वयं को बदलना ही है। मैं परमात्म-आदेश की अवहेलना कदाचित नहीं कर सकता हूँ। मेरा कल्याण इसी में है कि मैं प्रभु-आदेश का अक्षरश: पालन करता चलूँ। ऐसे संकल्प हमें पुराने संस्कारों को बदलने में सहायक सिद्ध होते हैं।

3. परमात्म-साथ और हाथ की अनुभूति : हम सवेरे-सवेरे उठ कर स्वयं से बातें करें कि मेरा साथी कौन है? किसने मुझे बदलाव का आदेश दिया है? खुशी की बात यह है कि स्वयं परमात्मा मुझे संस्कार परिवर्तन की शक्ति दे रहे हैं, वे स्वयं मेरे गाइड और शिक्षक बन गये हैं। **यदि परमात्म-हाथ और साथ पाकर भी मैं स्वयं को न बदल सका तो अवश्य ही कोई भी अन्य शक्ति मेरे पुराने संस्कारों को नहीं बदल सकती है। जब अन्दर से यह अनुभूति हो जाती है कि पुराने संस्कार तो दु:ख देने वाले हैं, गिरावट में लाने वाले हैं तो बदलाव की प्रक्रिया स्वत: शुरू हो जाती है।** कहने की आवश्यकता नहीं कि जब मेरे संस्कार बदल जायेंगे तो संसार बदलने में देर नहीं।

4. गहन तपस्या : गहन तपस्या से ही आत्मा के कठोर संस्कारों को बदलना सम्भव है। हम योग-अग्नि में स्वयं को तपायें। जैसे सोना आग में तप कर कंचन बन जाता है। ठीक इसी प्रकार मुझ आत्मा को, परमात्म-याद की ज्वाला में तप कर श्रेष्ठ और सम्पूर्ण बनना है। **हर दिन संकल्प करें कि मेरे बुरे संस्कार दूर होते जा रहे हैं और उनकी जगह अच्छे संस्कार लेते जा रहे हैं।** चूँकि पिछले 63 जन्मों के पुराने संस्कारों को मुझे अब इसी जन्म में भस्मीभूत करना है अत: मुझे निरन्तर योगी बनना ही है। ऐसी अनुभूति करें कि प्यारे शिव बाबा से शक्तिशाली किरणें, लेज़र बीम के रूप में मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं। फलस्वरूप, आत्मा की विकृतियाँ, बुराइयाँ अंश-वंश सहित नष्ट हो रही हैं और मैं आत्मा शुद्ध, पवित्र बनती जा रही हूँ।

5. ब्रह्मा बाबा को कॉपी करें : कॉपी करना तो बहुत सहज होता है। हमें भी केवल ब्रह्मा बाबा का अनुसरण करते चलना है। जब भी हमारे पुरुषार्थ के मार्ग में कोई भी पुराना संस्कार रुकावट बने तो उसी समय ब्रह्मा बाबा को अपने सामने लाकर यह प्रश्न करें कि यदि यही समस्या बाबा के सामने आई होती तो वे (ब्रह्मा बाबा) क्या करते? यह अनुभव-सम्मत है कि ऐसा आह्वान करते ही अन्दर से प्रेरणा आ जाती है, शक्ति मिल जाती है, आशा की किरण जाग्रत हो जाती है और हम उन संस्कारों से मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं, पुरुषार्थ की डगर आसान हो जाती है।

6. अभी नहीं तो कभी नहीं : यदि मैंने स्वयं के संस्कारों को अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर नहीं बदला तो फिर जन्म-जन्मान्तर मेरा यही पार्ट विश्व के बेहद के ड्रामा में फिक्स हो जायेगा। यह ऐसी बाजी है जो मुझे हर हालत में जीतनी ही होगी। जैसे कहावत भी है कि कोई काम नहीं मुश्किल जब किया इरादा पक्का अर्थात् मुझे अब अपने संकल्पों को दृढ़ और अटल बनाने की आवश्यकता है तो अवश्य ही मेरे बुरे संस्कार बदल कर, नव-संस्कार जाग्रत हो जायेंगे जो फिर नव विश्व निर्माण में सहायक होंगे।

7. स्वयं को देखें : संस्कारों के न बदलने का एक प्रमुख कारण, हमारा ध्यान स्वयं पर न होकर दूसरों की ओर चला जाता है। अभी फलाँ व्यक्ति तो बदला ही नहीं है, चालीस साल के योगियों में भी कमियाँ हैं, यदि मेरे में हैं तो कौन-सी बड़ी बात है, सेवाकेन्द्र पर रहने वाले निमित्त भी ये गलतियाँ करते हैं आदि। वास्तव में उक्त सभी संकल्प मेरी अपनी कमज़ोरी की ओर इशारा करते हैं। यदि मुझे दूसरों के सामने मिसाल बनना है तो स्वयं को बदलना होगा। अर्जुन का इतिहास में गायन इसलिए ही है कि जब गुरु ने उनसे पूछा कि तुम क्या देख रहे हो तो अर्जुन ने

तुरन्त उत्तर दिया कि मेरा ध्यान केवल मेरे लक्ष्य पर है। हमें भी अर्जुन बनना है और अपने मन में सदैव एक ही लक्ष्य रखना है कि मुझे बदलना है, मुझे दूसरों को नहीं, स्वयं को देखना है। मेरे सामने केवल और केवल बापदादा है।

8. अपना लक्ष्य निर्धारित करें : जैसे दुनिया में भी जब कोई कार्य किया जाता है तो उस काम के सम्पन्न करने की तिथि निश्चित की जाती है। देखा गया है कि जब समय निर्धारित कर लिया जाता है तो काम भी उसी अनुसार होने लगता है। ठीक इसी प्रकार हमें भी अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना है कि मुझे अमुक समय तक अपने संस्कारों को परिवर्तन करना ही है। 'सब कुछ चलता है' या 'अभी बना ही कौन है?' ये दो बातें लक्ष्य से पीछे धकेल देती हैं अत: मुझे सम्पूर्ण बनना है, मुझे स्वयं के बुरे संस्कारों को बदल कर उनके स्थान पर नये दैवीय संस्कारों को भरना है। मैं बदलूँगा तो जग बदलेगा। मेरे संस्कार परिवर्तन से अनेक आत्माओं को ऐसा करने की प्रेरणा मिलेगी। मुझे देखकर निराश, हताश आत्माओं में भी आशा की किरण जाग्रत हो जायेगी, वे भी अपने लक्ष्य निर्धारित कर लेंगे और यह परिवर्तन की प्रक्रिया एक से दूसरे, तीसरे तक होते हुए समस्त संसार को परितर्वन करने में सहायक होगी।

तो आइये, परिवर्तन की इस वेला में हम स्वयं को पूरी तरह से बदलने का आह्वान करें। अपने मूल संस्कारों को जाग्रत करें, दूसरों को देखना बंद करें और योगी, तपस्वी बनें। मेरे नये संस्कार ही नये संसार की नींव हैं। मनुष्य से देवता बनने के लिए मुझे अपनी सीरत को बदलना है। चिंतन की धारा बदले तो जीवन की धारा बदल जायेगी, संस्कारों को बदलें तो संसार बदल जायेगा। ❖

मधुमेह रोगियों के लिए होलिस्टिक हेल्थ कार्यक्रम

आपको जानकर हर्ष होगा कि ग्लोबल हॉस्पिटल माउंट आबू में मधुमेह रोग से बचाव व उपचार हेतु 4 Days Holistic Health Care package का शुभारंभ अक्टूबर 2011 से किया जा रहा है जिसका प्रमुख उद्देश्य मधुमेह के प्रति जागरूकता, बचाव व उपचार प्रदान करना है। मधुमेह के रोगियों को न केवल सही दवा की आवश्यकता है लेकिन साथ-साथ संतुलित आहार, नियमित ऐरोबिक व्यायाम, रिलेक्सेशन थेरेपी, नशामुक्ति, तनावमुक्ति, दिनचर्या परिवर्तन, सही प्रशिक्षण व नियमित जाँच की भी आवश्यकता है।

ग्लोबल हॉस्पिटल माउंट आबू, आध्यात्मिक वातावरण व सहानुभूतिपूर्ण देखभाल से युक्त होने के साथ-साथ आधुनिक तकनीक युक्त वार्ड, आई.सी.यू., ऑप्रेशन थियेटर व लगभग सभी प्रमुख जाँच सुविधाओं से संपन्न है। यहाँ मधुमेह रोगियों की हर प्रकार की जाँच व स्वास्थ्य संभाल के लिए प्रशिक्षित व अनुभवी मधुमेह रोग विशेषज्ञ व टीम भी उपलब्ध है।

आप इस कार्यक्रम का अवश्य लाभ लें व अधिक जानकारी के लिए सपंर्क करें –

- डॉ. श्रीमंत साहु, मधुमेह रोग विशेषज्ञ, ग्लोबल हॉस्पिटल, ई-मेल : diabeticlinic@gmail.com
- डॉ. बी.के.बिन्नी, मैनेजर जनसंपर्क व मीडिया, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09414291530 (समय प्रात: 9 से 1 बजे तक)
- डॉ. सविता सोनार, सहायक, मधुमेह विभाग, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन : 09461604139 (समय प्रात: 9 से सायं 5 बजे तक)

सप्ताह के दिनों का आध्यात्मिक अर्थ

● ब्रह्माकुमार भगवान, शान्तिवन

संगमयुग में परमात्मा शिव के द्वारा किये हुए दिव्य कर्त्तव्यों का यादगार विभिन्न त्योहारों, सांस्कृतिक उत्सवों, व्रतों, कर्मकाण्डों आदि-आदि के रूप में मनाया जाता है। इसीलिए हर त्योहार, व्रत, कर्मकाण्ड के पीछे कोई न कोई आध्यात्मिक रहस्य छिपा होता है। आध्यात्मिक रहस्य को जानकर व्यवहार व कर्म करेंगे तो आत्म-उन्नति सहज हो जायेगी। प्रस्तुत लेख में सप्ताह के सात दिनों का आध्यात्मिक अर्थ बताया गया है –

1. सोमवार :- सोमवार को भगवान शिव का दिन माना जाता है। सप्ताह की शुरूआत सोमवार से होती है और नई दुनिया की शुरूआत भी भगवान शिव द्वारा ही होती है। कलियुग के अंत में जब सृष्टि पर अज्ञान-अंधकार छा जाता है तो ऐसे समय में ही निराकार शिव परमात्मा का अवतरण साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन में होता है। प्रजापिता ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा स्वयं शिव परमात्मा सभी मनुष्यात्माओं को ज्ञान रूपी सोमरस पिलाते हैं। सोमरस अर्थात् सृष्टि के रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान। मैं कौन, मेरा आत्मिक पिता कौन, मैं कहाँ से आया हूँ – इस ज्ञान के साप्ताहिक कोर्स को कहा जाता है सोमरस। जो यह सोमरस पीता है वही अमरत्व को प्राप्त करता है अर्थात् उसको स्वर्गीय राज्य-भाग्य की प्राप्ति होती है। इसलिए सोमरस पिलाने वाले भगवान शिव के दिन को सोमवार कहा गया है।

2. मंगलवार :- सोमरस पाने के बाद आत्माओं का परमात्मा से मंगल मिलन हो जाता है। इसके लिए ही गायन है,

आत्मा, परमात्मा अलग रहे बहुकाल,
सुन्दर मेला कर दिया जब सतगुरु मिला दलाल।

परमात्मा के मिलन से परम आनन्द की प्राप्ति होती है और जीवन धन्य हो जाता है। संगमयुग में स्वयं परमात्मा पालनहार बन पालना करते हैं। हर पल परमात्मा से मंगल मिलन हो जाता है।

3. बुधवार :- परमात्म मिलन के बाद जो शक्ति प्राप्त होती है, उससे बुद्धि विशाल बन जाती है। सभी के प्रति आत्मिक भावना बन जाती है और आत्मा, ज्ञानी तू आत्मा बन जाती है। इसलिए बुधवार को सरस्वती (बुद्धि की देवी) का दिन भी कहा जाता है।

4. सतगुरुवार :- बुद्धि के विशाल हो जाने से सतगुरु प्रसन्न हो जाते हैं। फिर सतगुरु शिव द्वारा अनेक वरदान मिल जाते हैं जिसके कारण असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। जीवन में हर प्रकार की धारणा करना सहज हो जाता है। स्वयं परमात्मा का वरदानी हाथ साथ होने के कारण हर कार्य सफल हो जाता है। अतः सतगुरुवार है परम सतगुरु परमात्मा से वरदान प्राप्त करने का दिन।

5. शुक्रवार :- सतगुरु से वरदान पाकर आत्माओं को सच्चा सुख मिल जाता है, वे संतुष्ट हो जाती हैं। इसलिए शुक्रवार को संतोषी माता का दिन भी कहते हैं। आत्माओं के दिल से परमात्मा के लिए शुक्रिया निकलता है, दिल से वे गाने लगती हैं – **'पाना था सो पा लिया,**
अब काम क्या बाकी रहा।'

6. शनिवार :- परमात्मा के दिये हुए यथार्थ ज्ञान से प्रभु मिलन हो जाता है जिससे अतीन्द्रिय सुख मिल जाता है। तब इस तमोप्रधान दुनिया के वस्तु, वैभव, व्यक्ति का आकर्षण एवं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का तमोप्रधान सुख फीका लगने लगता है, परिणामस्वरूप विकार रूपी शनि से सभी आत्मायें मुक्त हो जाती हैं। आत्मायें महावीर बन जाती हैं इसलिए शनिवार को महावीर का दिन माना जाता है।

7. रविवार :- आत्मा जब विकारों के चंगुल से मुक्त हो जाती है तब मुक्ति, जीवनमुक्ति मिल जाती है अर्थात् आत्मा वापस अपने घर परमधाम जाकर, सतयुगी सृष्टि में कंचन काया में सूर्यवंश में अवतरित होती है इसलिए रविवार अर्थात् सूर्य का दिन। सूर्यवंशियों के राज्यकाल का दिन जहाँ आत्मा सर्वबंधनों से छूटी हुई रहती है इसलिए यह छुट्टी का दिन है। ❖

बाबा ने मुझे अपना बना लिया

● अनुराधा उपाध्याय, कानपुर

मैं नास्तिक तो नहीं थी पर ईश्वर के प्रति अगाध श्रद्धा भी नहीं थी। ढेर सारी दुविधायें थीं। निराकरण का कोई ऐसा स्त्रोत नहीं था जिस पर पूर्णतया विश्वास हो जाये। उदाहरणस्वरूप, एक दुविधा तो यह थी कि यदि हमें हमारे प्रारब्ध के अनुसार ही मिलना है तो कर्म व आराधना की आवश्यकता ही क्यों? यदि ईश्वर सब अच्छा ही चाहता है तो बुरा बनाया ही क्यों? यदि वो हमें सन्मति में रखना चाहता है तो दुर्बुद्धि की उत्पत्ति क्यों हुई? यदि ईश्वर जानता है कि इस आत्मा को किस चीज़ की ज़रूरत है तो फिर उससे माँगना कैसा? इन प्रश्नों के समाधान की तलाश व जिज्ञासा मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में खींच लाई।

सवालों के जवाब मिलने लगे

मेरा जिज्ञासु स्वभाव यह भी जानना चाहता था कि ये बहनें ऐसा क्या बताती हैं जो लोग इनके मुरीद हो जाते हैं। यहाँ आने के बाद राजयोग शब्द से मेरा परिचय हुआ। राज और योग – ये दोनों विरोधाभासी शब्द हैं। यदि राजा है तो योगी कैसे और यदि योगी है तो राजा कैसा। जैसे-जैसे राजयोग के कोर्स के दिन बढ़ते गये, मुझे मेरे सवालों के जवाब मिलने लगे। सबसे पहले तो मेरा स्वयं से परिचय हुआ। मेरे धर्म का असली नाम आदि सनातन देवी-देवता धर्म है, हमारी धर्म पुस्तक श्रीमद्भगवद् गीता है, ऐसी जानकारियाँ मुझे मिलीं। पाँच हज़ार वर्षों के इस सृष्टि-चक्र में नारायण से नर और नर से नारायण बनने के मूलमंत्र का पता चला। ऐसे अद्भुत ज्ञान ने मुझे हिन्दू धर्म (आदि सनातन देवी-देवता धर्म का परिवर्तित नाम) में निष्ठा तथा शिव बाबा से प्यार करना सिखाया। मुरली का ज्ञान अति आनन्ददायक एवं शिवबाबा का सानिध्य अति शीतल व मनभावी लगने लगा। राजयोग से क्या मिला, उसकी महिमा का बखान शब्दों में नहीं समा सकता।

भगवान को आज़माते उसके रंग में रंग गई

ऐसा रातों-रात नहीं हुआ। सुना है, जब आप सत्कर्म करते हैं, योग करते हैं, ईश्वरीय भावना में लिप्त होते हैं तो ईश्वर आपको आज़माता है, आपकी परीक्षा लेता है लेकिन मेरा मन इतना संशययुक्त था कि मैं शिवबाबा को आज़माने लगी। प्रतिदिन एक नई चुनौती – यदि आप सच्चे-प्यारे शिवबाबा हैं तो आप यह करके दिखाइये, मैं आपकी सत्ता स्वीकार करूँगी और बाबा इतने दयालु कि मुझ जैसी अनजान आत्मा की बात मान लेते। रात में सोते समय दिन-भर के कर्मों का लेखा-जोखा करती। मेरा मन मुझे धिक्कारता, क्या कर रही हो? अपने इष्टदेव की परीक्षा! सुबह होते ही सब भूल जाती और फिर नयी चुनौती दे देती। बाबा उसे भी पूरा कर देते। **धीरे-धीरे मैं शिवबाबा के रंग में रंगने लगी। जितना बाबा को याद करती, बाबा उससे ज्यादा मुझे याद करते। जीवन के सारे रंग अब शिवबाबा में दिखने लगे। जहाँ देखती हूँ, उसकी महिमा दिखती है। जीवन ही बदल गया। दिन-रात उसका ध्यान, उसका अहसास। मैं तो यही कहूँगी, मैंने शिव को नहीं बल्कि शिवबाबा ने मुझे अपना बना लिया। अब मैं शिवबाबा की प्यारी, न्यारी व दुलारी हूँ।** पहले ईश्वर की सत्ता को मंजूरी थी पर अब तो उस सत्ता (शिवबाबा) से प्यार हो गया है। जहाँ प्यार होता है, वहाँ कोई दुविधा नहीं होती। सारे प्रश्न महत्त्वहीन हो जाते हैं। बस, मीरा की तरह जुबान पर एक ही नाम है, 'मेरा तो शिवबाबा, दूसरा न कोई।'

❖

दीपावली का आध्यात्मिक..पृष्ठ 3 का शेष

है और उसी से अन्य दीपकों की ज्योति जलाई जाती है। अन्य किसी देवता के मंदिर में सदा दीप नहीं जलता है लेकिन आज भी भगवान विश्वनाथ के मंदिर में अनवरत् दीप जलता रहता है क्योंकि एक मात्र निराकार भगवान शिव ही सदा जागती ज्योति हैं। निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा प्राप्त कर जब हम निर्विकारी बनते हैं तो हमारा एक नया जन्म 'मरजीवा जन्म' होता है। हमारे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार और संबंध समाप्त हो जाते हैं तथा नये दैवी स्वभाव, संस्कार और संबंध बनते हैं। इसी की स्मृति में व्यापारी इस दिन पुराने खाते को बंद कर नया खाता खोलते हैं। भोलानाथ भगवान शिव के साथ व्यापार करने वाले आध्यात्मिक साधकों का परम कर्त्तव्य है कि अब वे आसुरी अवगुणों का खाता बंद कर दैवी गुणों के लेन-देन का खाता खोलें जिससे आगामी सतयुगी सृष्टि में वे श्री लक्ष्मी का वरण कर सकें।

दीपावली के दिन जुआ खेलने का बहुत महत्व है। कहते हैं कि जो इस दिन जुआ नहीं खेलता है उसकी अधमगति होती है। इसका भी गंभीर आध्यात्मिक रहस्य है। जुआ में कुछ संपत्ति हम दांव पर लगाते हैं जो कई गुणा होकर हमें मिलती है। पावन सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि की स्थापनार्थ जब पतित पावन परमात्मा शिव इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं तो वे हम जीवात्माओं को आदेश देते हैं कि अपने कौड़ी तुल्य तन-मन-धन को ईश्वरीय सेवा में लगा दो तो 21 जन्मों के लिए तुमको कंचन काया, सतोप्रधान मन और अखुट धन-संपत्ति की प्राप्ति होगी। धन्य हैं वे नर-नारी जो इस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर ऐसा ईश्वरीय जुआ खेलते हैं।

दीपावली के आध्यात्मिक रहस्यों को न जानने के कारण आज मनुष्य उसे सामाजिक उत्सव के रूप में ही मनाते हैं और महान आध्यात्मिक उन्नति से वंचित रह जाते हैं। कहाँ यह ईश्वरीय जुआ और कहाँ वह स्थूल जुआ जिसके कारण कितने लोगों को जेल की यातना सहनी पड़ती है।

आइये, अब हम प्रतिज्ञा करें कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन-मंदिर की सफाई कर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव से आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करेंगे, आसुरी अवगुणों और संस्कारों का खाता बंद कर दैवी गुण संपन्न बनेंगे तथा अपने तन-मन-धन को मानव मात्र के आध्यात्मिक उत्थान में लगा देंगे। फिर तो इस पुण्यभूमि भारतवर्ष पर श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना हो जायेगी जहाँ दुख-अशान्ति का नामोनिशान भी नहीं रहेगा। शेर-बकरी एक घाट पर जल पीयेंगे और अखुट धन-संपत्ति से नर-नारी मालामाल हो जायेंगे। इतना महान अंतर है मिट्टी के जड़ दीप जलाने और चैतन्य आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करने में।

सुनामी बनाम..पृष्ठ 18 का शेष

अब जबकि तमोगुणी संसार के दिन-प्रतिदिन बिगड़ते हालात, जलवायु परिवर्तन, व्यवस्था परिवर्तन, हिंसक युद्ध एवं विकास के नाम पर प्रकृति से खिलवाड़ किसी से छिपे नहीं हैं, तब शिवनामी अर्थात् शिव परमात्मा की सूक्ष्म शिक्षाओं, प्रेरणाओं और इशारों को गंभीरता और गहराई से समझकर जीवन पर्यन्त उन पर चलने में ही मानव मात्र का कल्याण है। विकट परिस्थितियों में प्रतिपल ईश्वर ही हमारा सच्चा साथी है। उस सच्चे साथी के प्रति अनन्य प्रेम भाव रख, उनकी प्रेममयी, आनन्दमयी लहरों को स्वयं में समाकर आत्मिक बल से संपन्न होकर, नष्टोमोहा बनकर हम भविष्य में आने वाली चुनौतियों और विकराल परिस्थितियों पर सहज विजय प्राप्त कर सकते हैं। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 atamprakash@bkivv.org